A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 13 अप्रैल, 2025

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 10 अंक 183, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

समानांतर ...

फोटोः गिरीश शर्मा

सुप्रभात

डर है मत लिखिए

क्या पता तुम्हारे चालाक शब्दों से किसी
बेकसूर के जीने की प्रेरणा मरती हो
क्या पता ईर्ष्या की वजह से जेल में बंद
राजनीतिक बंदी नाउम्मीद हो रहा हो
क्या पता दम तोड़ रहे किसान के पास कोई
भरोसेमंद गीत ना बचा हो
उस वक़्त तो बिल्कुल मत लिखिए जब एक
पेड़ पतझड़ से गुज़र रहा हो उसे उदास होना
पसंद है निराश होना बिल्कुल नहीं
बेहतर है छुप जाना कभी शब्दों की ओट में
कभी नीयत में खोट से
कभी इतना चुप कि खुद की आवाज़ भी
पहचान ना सको।

– नीलोत्पल

1300 रेलवे स्टेशनों का होना है कायाकल्प, 104 हो गए तैयार

● रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया-क्या-क्या होंगी सुविधाएं

नई दिल्ली (एजेंसी)। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शुक्रवार को बताया कि अमृत भारत योजना के तहत देशभर में 1,300 रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है, जिनमें से 104 पर काम पूरा हो चुका है। इस योजना का उद्देश्य पूरे रेलवे नेटवर्क में स्टेशनों को बेहतर और आधुनिक बनाना तथा यात्रियों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2023 में स्टेशन पुनर्विकास योजना की आधारशिला रखी थी। मुंबई में जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में मीडिया को संबोधित करते हुए वैष्णव ने बताया कि इन 1,300 स्टेशनों में से कई में पुनर्विकास कार्य पूरा होने वाला है, जिनमें से 132 महाराष्ट्र में स्थित हैं। मंत्री ने कहा कि कई अन्य स्टेशनों पर काम में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। वैष्णव ने कहा, दुनिया में कहीं भी इस पैमाने पर स्टेशन पुनर्विकास परियोजना नहीं हुई है।

मंत्री ने संवाददाता सम्मेलन में योजना के तहत आने वाले स्टेशनों पर चल रहे काम की तस्वीरें दिखाईं, जिसमें मुंबई का छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (सीएसएमटी) भी शामिल है, जिसे विश्वस्तरीय ट्रेन सुविधा के रूप में विकसित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सीएसएमटी स्टेशन के पुनर्विकास का काम बहुत बड़ा है, जिसकी अनुमानित लागत 1,800 करोड़ रुपये है और यह बहुत तेज गति से चल रहा है। मंत्री ने कहा कि पुनर्विकास कार्य पूरा होने पर दक्षिण मुंबई में ब्रिटिश काल का परिसर सीएसटीएम लंदन के किंग्स क्रॉस स्टेशन से कहीं बेहतर दिखाई देगा। वैष्णव ने कहा कि इस योजना का उद्देश्य स्टेशनों को आधुनिक सुविधाओं जैसे प्रतीक्षालय, फूड कोर्ट (भोजनालय), स्वच्छ शौचालय, लिफ्ट, एस्केलेटर और डिजिटल सुविधाओं से लैस करना है। सीएसएमटी के अलावा, महाराष्ट्र में इस योजना के तहत शामिल कुछ प्रमुख स्टेशन दादर (मध्य और पश्चिमी), अंधेरी (मुंबई), पुणे, नासिक रोड, नागपुर और छत्रपति संभाजीनगर समेत अन्य स्टेशन हैं। संवाददाता सम्मेलन में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस भी उपस्थित थे। इस दौरान मंत्री ने रेलवे की योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी।

नए वक्फ कानून को लेकर वेस्ट बंगाल में हिंसा

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के मुस्लिम बहुल मुर्शिदाबाद जिले में वक्फ (संशोधन) अधिनियम के खिलाफ निकाले गए विरोध प्रदर्शनों के दौरान भड़की हिंसा के मामले में 3 की मौत के बाद 120 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के मुताबिक, यह हिंसा शुक्रवार को उस वक्त भड़क गई जब प्रदर्शनकारियों ने कई जगहों पर सड़कें जाम कीं, पुलिस पर पथराव किया और वाहनों में आग लगा दी। हिंसा केवल मुर्शिदाबाद तक सीमित नहीं रही, बल्कि मालदा, साउथ 24 परगना और हुगली जिलों तक फैल गई।

तीन महीने के भीतर बिल पर लेना होगा फैसला

● पहली बार सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रपति के लिए तय की समय सीमा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट का राज्यपाल के मामले में फैसला शुक्रवार को ऑनलाइन अपलोड हो गया है। इस फैसले में पहली बार सुप्रीम कोर्ट ने निर्धारित किया है कि राष्ट्रपति को राज्यपाल की तरफ से उनके विचार के लिए आरक्षित विधेयकों पर संदर्भ प्राप्त होने की तिथि से तीन महीने की अवधि के भीतर निर्णय लेना चाहिए। शीर्ष अदालत की तरफ से तमिलनाडु के राज्यपाल आर एन रवि की तरफ से राष्ट्रपति के विचार के लिए रोके गए और आरक्षित किए गए 10 विधेयकों को मंजूरी देने और राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों पर कार्रवाई करने के लिए सभी राज्यपालों के लिए समयसीमा निर्धारित की थी। फैसला करने के चार दिन बाद, 415 पृष्ठों का निर्णय शुक्रवार को रात 10.54 बजे शीर्ष अदालत की वेबसाइट पर अपलोड किया गया। शीर्ष अदालत ने कहा कि हम गृह मंत्रालय की तरफ से निर्धारित समय-सीमा को अपनाना उचित समझते हैं... और निर्धारित करते हैं कि राष्ट्रपति को राज्यपाल की तरफ से उनके विचार के लिए

आरक्षित विधेयकों पर संदर्भ प्राप्त होने की तिथि से तीन महीने की अवधि के भीतर निर्णय लेना आवश्यक है। इस अवधि से परे किसी भी देरी के मामले में, उचित कारणों को दर्ज करना होगा और संबंधित राज्य को सूचित करना होगा। राज्यों को भी सहयोगात्मक होना चाहिए और उठाए जा सकने वाले प्रश्नों के उत्तर देकर सहयोग करना चाहिए और केंद्र सरकार द्वारा दिए गए सुझावों पर शीघ्रता से विचार करना चाहिए।

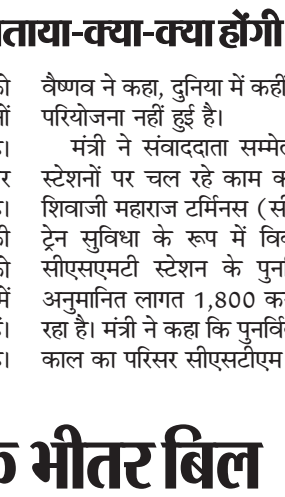

गौ-शालाओं से मध्यप्रदेश में गौ-सेवा की लिखेंगे नई इबारत : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री ने महू में हाईटेक सुविधाओं से युक्त कामधेनु गौ-शाला का किया भूमि-पूजन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश में गौ-संरक्षण और संवर्धन की दिशा में राज्य सरकार द्वारा तेजी से संकल्पबद्ध होकर कार्य किया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा प्रधानमंत्री श्री नरेन्?द्र मोदी के संकल्प को पूरा करने के लिए गौ-शालाओं के विस्तार के लिए योजनाबद्ध रूप से प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में गौ-शालाओं के माध्यम से गौ-सेवा की नई इबारत लिखी जाएगी और प्रदेश में नई दुग्ध क्रांति लाई जाएगी। इससे दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के साथ ही दुग्ध उत्पादकों की आमदनी में भी वृद्धि की जाएगी। हमारा प्रयास है कि दुग्ध उत्पादकों को दुग्ध के बेहतर दाम मिले। इस दिशा में हम तेजी से प्रयास कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को इंदौर जिले के महू-मण्डलेश्वर मार्ग पर स्थित आशापुरा में प्रदेश में हाईटेक कामधेनु गौ-शाला के भूमि-पूजन समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस गौ-शाला में 10 हजार गायों के पालन-पोषण की व्यवस्था रहेगी। यह गौ-शाला लगभग 25 हेक्टेयर क्षेत्र में बनाई जा रही है। इस गौ-शाला का निर्माण इंदौर नगर निगम द्वारा किया जायेगा। इसकी देखरेख की जिम्मेदारी भी नगर निगम ही संभालेंगी। गौ-शाला के संचालन में संत समाज का सहयोग भी लिया जायेगा। गौ-शाला के संचालन में समाजसेवी निस्वार्थ भाव से गौ-सेवा के कार्यों में जुड़ सकेंगे। गायों के पालन और संरक्षण के लिये सभी जरूरी सुविधाएं गौ-शाला में रहेंगी। गौ-शाला क्षेत्र में सघन पौध-रोपण भी किया जायेगा। कार्यक्रम में महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, राज्यसभा सदस्य सुश्री कविता पाटीदार, विधायक सुश्री उषा ठाकुर, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रीना सतीश मालवीय, श्री सुमित मिश्रा, श्री श्रवण चावड़ा, श्री निरंजन सिंह चौहान सहित जनप्रतिनिधि और स्वामी श्री अच्युतानंद जी महाराज विशेष रूप से मौजूद रहे।

गौ–माता की सेवा हमारी संस्कृति एवं संस्कारों का अहम हिस्सा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गौ-माता की सेवा हमारी संस्कृति एवं संस्कारों का अहम हिस्सा है। गौ-माता में 33 करोड़ देवी-देवताओं का वास होता है, जो हमारे लिये पूजनीय है। उन्होंने कहा कि गौ-वंश के संरक्षण और संवर्धन के लिये राज्य शासन ?निरंतर प्रयासरत है। हमने यह वर्ष गौ-माता की सेवा को समर्पित किया है। गौ-वंश को बढ़ावा देने के लिये डॉ. भीमराव अम्बेडकर के नाम से योजना प्रारंभ की गयी है। इस योजना में गौ-वंश पालकों को अनुदान दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि गौ-संरक्षण एवं गौ-संवर्धन के लिये मध्यप्रदेश सरकार प्रतिबद्ध है। प्रदेश में स्वावलंबी गौ-शालाओं की स्थापना नीति-2025 बनायी गयी है। निराश्रित गौ-वंश की समस्या का समाधान गौ-शालाओं की स्थापना से किया जा रहा है।

गौ–सेवा कर, बछिया को दुलारा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम के प्रारंभ में गौमाता का पूजन कर गौ-ग्रास भी खिलाया। मुख्यमंत्री ने बछिया को गोद में लेकर स्नेह से दुलार किया। महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव ने अपने सम्बोधन में कहा कि मध्यप्रदेश में हर क्षेत्र में तेजी से विकास हो रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में विकास की नयी इबारत लिखी जा रही है। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा गौ-वंश के संरक्षण एवं संवर्धन के लिये कृत संकल्पित होकर कार्य किये जा रहे हैं। हातोद स्थित गौ-शाला का कायाकल्प किया गया। इसे उच्च सुविधाओं से युक्त किया गया है। इससे गायों की संख्या बढ़कर 650 से 2 हजार हो गयी। इंदौर देश की एकमात्र ऐसी नगर निगम होगी जहाँ गौ-सेवा के लिये सवा सौ बीघा भूमि पर गौ-शालाये होंगी। स्वामी श्री अच्चुतानंदजी महाराज ने कहा कि गौ-रक्षा की दिशा में यह सबसे बड़ा प्रकल्प है। यह गौ-शाला देश की अन्य गौ-शालाओं के लिये उत्कृष्ट उदाहरण बनेगी।

छत्तीसगढ़ में एनकाउंटर तीन नक्सली ढेर

● मौके से भारी मात्रा में हथियार और विस्फोटक बरामद

दंतेवाड़ा/बीजापुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में दंतेवाड़ा-बीजापुर बॉर्डर के भैरमगढ़ इलाके में पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ चल रही है। सुबह 9 बजे से दोनों तरफ से फायरिंग जारी है। जिसमें जवानों ने 3 माओवादी को ढेर किया है। तीनों के शव के साथ हथियार बरामद किया गया है। दंतेवाड़ा जिले के एसपी गौरव राय ने मुठभेड़ की पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि बीजापुर के इंद्रावती क्षेत्र के जंगलों में माओवादियों की मौजूदगी की सूचना मिली थी, जिसके बाद करीब 400 जवानों को ऑपरेशन के लिए रवाना किया गया। जवानों ने 2025 में अब तक 146 नक्सलियों को मार गिराया है। एसपी गौरव राय के मुताबिक, दोनों जिलों का यह जॉइंट ऑपरेशन है। सर्च अभियान अभी जारी है। एनकाउंटर में माओवादियों को भारी नुकसान होने की संभावना है। मुठभेड़ खत्म होगी तब स्थिति क्लियर होगी। नक्सलियों को कितना नुकसान हुआ है, इसके बाद ही पता लग पाएगा। फिलहाल मुठभेड़ जारी है। दंतेवाड़ा और बीजापुर बॉर्डर पर सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में 45 लाख की इनामी महिला नक्सली लीडर रेणुका उर्फ बानू को ढेर किया था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 13 अप्रैल 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

झारखंड में दो दिनों में सीएम हेमंत का डबल धमाका

● बाबूलाल मरांडी के बाद अब सुदेश महतो को दिया झटका

रांची (एजेंसी)। झारखंड विधानसभा चुनाव 2025 में बड़ी जीत हासिल कर दोबारा सत्ता में आने के बाद मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन अब संगठन को और अधिक मजबूत बनाने में जुटे हैं। झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के संगठन विस्तार की रणनीति के तहत राज्य के विभिन्न जिलों के सामाजिक कार्यकर्ताओं का जेएमएम में शामिल होने का सिलसिला जारी है। संताल

परगना प्रमंडल के दौरे के क्रम में एक दिन पहले बीजेपी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष ताला मरांडी ने जेएमएम का दामन थाम लिया, वहीं शनिवार को रांची में जेएमएम ने आजसू पार्टी को झटका दिया है। आजसू पार्टी के संस्थापक सदस्य कमल किशोर भगत की पत्नी नीरू शांति भगत जेएमएम में शामिल हो गईं। जेएमएम के केंद्रीय महासचिव विनोद पांडे ने नीरू शांति भगत को पार्टी की सदस्यता दिलाई। नीरू शांति भगत के साथ उनके कई समर्थकों ने आजसू पार्टी छोड़कर जेएमएम की सदस्यता ली। नीरू शांति भगत 2019 और 2024 में लोहरदगा सीट से आजसू के टिकट पर चुनाव लड़ चुकी हैं।

भोपाल में एडीजी इंटेलिजेंस के ड्राइवर की मौत

पुलिस की एमटी शाखा के जवान को परवलिया इलाके में अज्ञात वाहन ने मारी टक्कर

भोपाल (नप्र)। भोपाल के परवलिया क्षेत्र में एक तेज रफ्तार वाहन की टक्कर से पुलिस जवान आनंदी लाल (38) की मौत हो गई। मृतक एडीजी इंटेलिजेंस का सरकारी वाहन चलाते थे और मूल रूप से एमटी शाखा में तैनात थे।

जानकारी के अनुसार आनंदी लाल अपने रिश्तेदार से मिलकर भोपाल लौट रहे थे। रात करीब 11 बजे हुए इस हादसे में उनकी बाइक एक खंभे से टकरा गई, जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए। राहगीरों ने उन्हें अस्पताल पहुंचाया, लेकिन शुक्रवार सुबह 7-30 बजे इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया।

पुलिस अज्ञात वाहन की तलाश में उस रास्ते से गुजरने वाले वाहनों की जानकारी जुटा रही है, लेकिन अभी तक वाहन का पता नहीं चल सका।

आनंदी के बुजुर्ग पिता गंगाधर ने बताया, हमारा सहारा चला गया। आनंदी पांच भाई-बहनों में सबसे बड़ा था और पूरे परिवार की जिम्मेदारी उसी के कंधों पर थी। मृतक का 8 साल का एक बेटा है। पत्नी गहरे सदमे में बेसुध पड़ी हैं।

आनंदी ने तीन बहनों की शादी करवाई, छोटे भाई की पढ़ाई का खर्च उठाया और दो साल पहले सड़क हादसे में जान गंवाने वाले चाचा की चार बेटियों की जिम्मेदारी भी संभाली।

थाना प्रभारी रोहित कुमार के मुताबिक, हादसे की रात उस रास्ते से गुजरे वाहनों की जानकारी जुटाई जा रही है, लेकिन अभी तक अज्ञात वाहन ट्रेस नहीं हो सका है।

तेजस्वी यादव के मिशन 'कोर वोटर' का खुलासा!

● लालू के प्लान ने बिगाड़ा नीतिश और जीतन राम मांझी का खेल

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरने के बावजूद सत्ता हासिल करने से चूकने के पांच साल बाद, आरजेडी नेता तेजस्वी यादव एक मिशन पर हैं। पार्टी के सामाजिक आधार का विस्तार करना और एक मेरी पार्टी की छवि को तोड़ना। तेजस्वी, वक्फ संशोधन अधिनियम के खिलाफ चौपालों की घोषणा करके पार्टी के मुस्लिम मतदाता वर्ग को मजबूत करने की कोशिश कर रहे हैं, वहीं वे अत्यंत पिछड़ा वर्ग (ईबीसी) के अस्थायी मतदाताओं के बीच से एक नया मतदाता वर्ग बनाने की कोशिश भी कर रहे हैं। ये वो वोटर हैं, जो 2023 के जाति

सर्वेक्षण के अनुसार राज्य की आबादी का 36.1 फीसदी है। और अनुसूचित जाति (एससी), जो आबादी का 19.65 फीसदी है। तेजस्वी ने अन्य सामाजिक समूहों तक पहुंच बनाकर राजद को मेरी पार्टी से 'ए टू जेड' पार्टी में बदलने के अपने प्रयासों के बारे में खुलकर बात की है। जबकि ईबीसी को ऐसे मतदाता माना जाता है जो किसी विशेष पार्टी या नेता से बंधे नहीं होते हैं, गैर-पासवान दलितों को भी इस श्रेणी का हिस्सा माना जाता है। पासवान, जो आबादी का 5.3 फीसदी हिस्सा हैं, बड़े पैमाने पर केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) का वफादार वोट बैंक हैं। यही कारण है कि आरजेडी हाल ही में मुसहरों के बीच अपनी उपस्थिति मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

आज भोपाल आएंगे केंद्रीय मंत्री अमित शाह

रविंद्र भवन के आसपास फ्लाइंग ऑब्जेक्ट पर प्रतिबंध, पुलिस कमिश्नर ने आदेश जारी किए

भोपाल (नप्र)। भोपाल में रविवार 12 अप्रैल को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का दौरा प्रस्तावित है। इसे देखते हुए रविंद्र भवन और आसपास के पांच किलो मीटर के दायरे में ड्रोन, पैराग्लाइडर, हॉट बैलून, अन्य फ्लाइंग ऑबजेक्ट उड़ानों पर रविवार की सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक पूरी तरह से प्रतिबंधित रहेगा। पुलिस कमिश्नर हरीनारायणचारी मिश्रा ने यह आदेश शनिवार की दोपहर जारी किए हैं। जानकारी के मुताबिक गृहमंत्री अमित शाह को+सुरक्षा दर्जा के साथ सीआरपीएफ सुरक्षा कवर प्राप्त है। उनके भोपाल में भ्रमण कार्यक्रम प्रस्तावित है। उनकीं+ सुरक्षा को देखते हुए रविंद्र भवन भोपाल से 5 किलोमीटर की परिधि में ड्रोन, पैराग्लाईडर, हॉट बैलून, अन्य फ्लाइंग ऑबजेक्ट के उड़ने पर प्रतिबंध रहेगा। साथ ही कार्यक्रम स्थल के आसपास के पांच किलोमीटर एरिया को रेड जोन, नो फ्लाइंग जोन घोषित किया है।

कॉमर्शियल फ्लाइट्स प्रतिबंधात्मक आदेश से मुक्त रहेंगी

इस आदेश का उल्लंघन पाये जाने पर दोषी व्यक्ति के विरूद्ध नियमानुसार भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 223 के अंतर्गत वैधानिक कार्यवाही की जाएगी। कॉमर्शियल फ्लाइट्स इस प्रतिबंधात्मक आदेश के पालन से मुक्त रहेंगी।

सीएम की पहल पर प्रदेश को मिला 25वां अभयारण्य

सागर में डॉ. भीमराव अंबेडकर अभयारण्य की अधिसूचना जारी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की जैव विविधता संरक्षण के लिए की गई पहल पर मध्यप्रदेश को एक और नया अभयारण्य मिल गया है। सागर जिले के 258.64 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र में नया अभयारण्य बनाया जा रहा है। इस नये अभयारण्य को ञ्चडॉ. भीमराव अंबेडकर अभयारण्यस्र के नाम से जाना जायेगा। राज्य सरकार ने इस नये अभयारण्य की अधिसूचना भी जारी कर दी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर जानकारी देते हुए कहा कि यह अभयारण्य न केवल वन्य जीवों को एक सुरक्षित आश्रय प्रदान करेगा, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, पारिस्थितिक संतुलन और स्थानीय रोजगार सृजन की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बाबा साहेब के नाम समर्पित यह अभयारण्य संविधान निर्माता के प्रति हमारे सम्मान और प्रकृति के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है। यह निर्णय समावेशी विकास एवं हमारे संकल्प की दिशा में एक नया कदम और बाबा साहेब को सच्ची श्रद्धांजलि है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर अभयारण्य, सागर जिले के उत्तर सागर वन मंडल अंतर्गत बंडा और शाहगढ़ तहसीलों के आरक्षित वन क्षेत्र में स्थापित किया गया है, जिसकी कुल सीमा 25,864 हेक्टेयर (यानी 258.64 वर्ग किलोमीटर) होगी।

इस अभयारण्य के गठन से क्षेत्रीय पारिस्थितिक तंत्र को सुदृढ़ करने के साथ-साथ खाद्य श्रृंखला को संतुलित बनाए रखने में मदद मिलेगी। इससे पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा और स्थानीय रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

10 तारीख गुजर गई, लाड़ली बहनें करती रहीं इंतजार

अब 16 को सीएम ट्रांसफर करेंगे 22वीं किश्त

भोपाल (नप्र)। विधानसभा चुनाव से पहले शुरू की गई 'लाड़ली बहना योजना' की इस महीने की किश्त अब तक लाभार्थी महिलाओं के खातों में नहीं पहुंची है। तय तिथि गुजर जाने के बाद भी राशि न आने पर कांग्रेस ने सवाल खड़े किए हैं।

पीसीसी चीफ जीतू पटवारी सहित पार्टी के अन्य नेताओं ने इसे सरकार की वादाखिलाफी बताया है। वहीं, भाजपा नेताओं का कहना है कि योजना के तहत हर महीने किश्त समय पर दी जाती रही है और जल्द ही इस बार की राशि भी ट्रांसफर कर दी जाएगी।

पटवारी ने एक्स पर लिखा- 'लाड़ली बहना योजना' की किस्त को लेकर पहले बड़े-बड़े होर्डिंग देखने को मिलते थे, लिखा रहता था, 'लाड़ली बहनों 10 तारीख आ रही है'। लेकिन, इस बार 10 तारीख को लाड़ली बहनों के खाते में पैसे ही नहीं आए। क्या कर्ज में कमी हो गई या सरकार की नीयत बदल गई?

मंत्री बोलीं- पैसे खातों में हर महीने हो रहे ट्रांसफर

पटवारी के बयान को लेकर मीडिया ने महिला बाल विकास मंत्री निर्मला भूरिया से लाड़ली बहना योजना की किश्त न आने को लेकर पूछा तो उन्होंनें कहा- लाडली बहना योजना की राशि हर महीने जा रही है। सभी के खातों में लाड़ली बहना की राशि डाली जाएगी। कोई किश्त नहीं रूकेगी।

मंडला से सीएम करेंगे राशि ट्रांसफर

विभागीय अधिकारियों की मानें तो 16 अप्रैल को मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव मंडला में लाड़ली बहना योजना की राशि ट्रांसफर करेंगे। मंडला कलेक्टर सोमेश मिश्रा ने बताया कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव का 16 अप्रैल को मंडला में कार्यक्रम प्रस्तावित है। वे टिकरवारा गांव में आयोजित 1100 बेटियों के सामूहिक विवाह सम्मेलन में शामिल होंगे। इसी कार्यक्रम के दौरान वे लाड़ली बहना योजना की राशि का अंतरण करेंगे। निर्माण कार्यों का भूमिपूजन-लोकार्पण भी होगा।

जमीन बेचो वरना टुकड़े कर ड्रम में भरवा दूंगी!

बांदा (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के गिरवां थाना क्षेत्र से एक ऐसा सनसनीखेज मामला सामने आया है, जो मेरठ के चर्चित सौरभ हत्याकांड की याद दिला रहा है। यहां एक 42 वर्षीय युवक ने अपनी पत्नी पर जान से मारने की धमकी देने, अवैध संबंधों और लगातार मानसिक प्रताड़ना का आरोप लगाते हुए पुलिस अधीक्षक से सुरक्षा की गुहार लगाई है। पति ने पत्नी पर जमीन बेचने के लिए दबाव बनाने का आरोप लगाया है। इस मामले में पति का कहना है कि पत्नी उसे बार-बार जान से हाथ धो बैठने की धमकी दे रही है। पीड़ित पति का आरोप है कि उसकी पत्नी का पिछले तीन वर्षों से औरैया जनपद के एक युवक से प्रेम संबंध चल रहा है। हालात तब और बिगड़ गए जब एक रात आरोपी प्रेमी उसके घर में घुस आया।

झाबुआ में टैम्पो ट्रैक्स पलटा, 4 की मौत, 2 गंभीर

जहर खाए व्यक्ति को अस्पताल ले जा रहे थे

झाबुआ (नप्र)। झाबुआ में पेटलावद के रायपुरिया थाना क्षेत्र में बोलासा घाट पर शुक्रवार रात करीब 11 बजे सवारी वाहन (टैम्पो ट्रैक्स) पलटने से महिला समेत तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे में 8 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। इलाज के दौरान एक और व्यक्ति ने दम तोड़ दिया। इस तरह मृतकों की संख्या 4 हो गई है। सभी घायलों को पेटलावद

सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घायलों में 2 की हालत ज्यादा गंभीर है, जिन्हें गुजरात के दाहोद रेफर किया गया है।पेटलावद थाना प्रभारी दिनेश शर्मा ने बताया कि सभी लोग धार जिले के रहने वाले हैं। ये लोग परिवार के एक व्यक्ति को जहर खाने के बाद इलाज के लिए पेटलावद सिविल अस्पताल लेकर जा रहे थे। इसी दौरान बोलासा घाट पर वाहन चालक ने संतुलन खो दिया और गाड़ी पलट गई।

खेलते-खेलते पानी से भरे गड्ढे में डूबीं तीन बहनें, मौत

सतना (नप्र)। सतना में सड़क निर्माण के लिए खोदे गए गड्ढे में डूबने से तीन बहनों की मौत हो गई। बच्चियां फिसलकर पानी में जा गिरीं। जब तक ग्रामीण उन्हें बचा पाते, तब तक देर हो चुकी थी। पुलिस से ठेकेदार मान सिंह तोमर के खिलाफ लापरवाही से मौत का केस दर्ज किया है। घटना जसो थाना क्षेत्र के रीछुल गांव में शनिवार दोपहर की है। यहां सड़क निर्माण के लिए महीने पहले गड्ढा खोदा गया था। राजकुमार चौरसिया की बेटियां तान्या (8) और 5 साल की जुड़वां बहनें जान्हवी और गौरी घर के पास खेल रही थीं। खेलते-खेलते गड्ढे तक पहुंच गईं, जो बारिश के पानी से पूरी तरह भर चुका था।

ठेकेदार पर लापरवाही का आरोप-एक ही परिवार की तीन बच्चियों की मौत से गांव में मातम का माहौल है। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि यह मौतें प्रशासन की लापरवाही और ठेकेदार की गैरजिम्मेदारी का नतीजा हैं। यह गड्ढा निर्माणाधीन नागौद-सलेहा बाईपास के लिए ठेकेदार मान सिंह तोमर ने तीन महीने पहले खुदवाया था।

ग्रामीण बोले- दोषियों को मिले सजा-गांव वालों का कहना है कि ठेकेदार ने गड्ढा खोदकर ऐसे ही छोड़ दिया था, न तो कोई चेतावनी बोर्ड लगाया और न ही आसपास कोई सुरक्षा व्यवस्था की गई।

जम्मू-कश्मीर के अखनूर में सेना का जेसीओ शहीद

● किश्तवाड़ में सुरक्षाबलों ने जैश के 3 आतंकी मार गिराए, सर्च ऑपरेशन जारी

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-जिले के अखनूर में शनिवार को आतंकवादियों से मुठभेड़ में 9 पंजाब रेजिमेंट के जेसीओ कुलदीप चंद शहीद हो गए। अखनूर के केरी बट्टल इलाके में शुक्रवार देर रात एनकाउंटर शुरू हुआ था। सुरक्षाबलों ने पूरे इलाके को घेरा हुआ है। सेना ने एक्स पर पोस्ट कर इसकी जानकारी दी। वहीं, शुक्रवार को किश्तवाड़ जिले के घने जंगलों में एनकाउंटर के दौरान सुरक्षाबलों ने शुक्रवार देर रात तक 3 आतंकियों को मार गिराया। ऑपरेशन रात से चल रहा है। अधिकारियों ने बताया कि मारे गए तीनों आतंकी जैश-ए-मोहम्मद के हैं। इनमें टॉप कमांडर सैफुल्लाह भी शामिल है। इससे पहले 4 और 5 अप्रैल की दरमियानी रात जम्मू में एलओसी पर आरएस पुरा सेक्टर पर सेना के जवानों ने एक पाकिस्तानी घुसपैठिए को मार गिराया था। वहीं, 1 अप्रैल को एलओसी पर सेना के एनकाउंटर में 4-5 पाकिस्तानी घुसपैठियों को मारा गया था।

देशभर में यूपीआई सर्विस ठप्प, यूजर रहे परेशान

● 3 घंटे से ज्यादा समय तक रही डाउन,बनी हुई है दिक्कत ● 20 दिन में तीसरी बार आई परेशानी, ट्रांजेक्शन में समस्या

मुंबई (एजेंसी)। देशभर में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस यानी यूपीआई सर्विस में करीब तीन घंटे तक समस्या रही। सुबह करीब 11.30 बजे से 1.00 बजे तक सबसे ज्यादा पेमेंट फेल्योर रिपोर्ट की गई।

काफी देर तक लोगों को यूपीआई पेमेंट करने में दिक्कत आ रही है। बीते 20 दिन में यह तीसरी बार है जब ट्रांजेक्शन में समस्या हो रही है। वेबसाइट और ऑनलाइन सर्विसेज की रियलटाइम स्टेटस बताने वाला प्लेटफॉर्म डाउनडिटेक्टर के अनुसार के अनुसार, समस्या फेस कर रहे करीब 81 फीसदी लोगों को पेमेंट करने में समस्या आ रही है। 17 फीसदी लोगों को फंड ट्रांसफर करने और लगभग 2 फीसदी को खरीदारी करने में दिक्कतें हुईं।

नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया ने बताया, रुक-रुक कर टेक्निकल इश्यू का सामना करना पड़ रहा है, जिसके चलते यूपीआई ट्रांजेक्शन में

दिक्कत हो रही है। हम इस समस्या को हल करने के लिए काम कर रहे हैं, और आपको अपडेट रखेंगे। आपको हुई असुविधा के लिए खेद है। समस्या सुबह करीब 11.30 बजे शुरू हुई थी। तब इस प्लेटफॉर्म पर करीब 900 लोगों ने रिपोर्ट की थी। दोपहर करीब 1.00 बजे सबसे ज्यादा 2400 लोगों ने समस्या रिपोर्ट की थी। दोपहर 2.30 बजे समस्या में सुधार देखने को मिल रहा है। अभी केवल 300 यूजर्स ने रिपोर्ट दर्ज की है।

- **शिकायतों की संख्या पहुंची 2 हजार के पार**- डाउनडिटेक्टर पर यूपीआई डाउन होने की शिकायत में दोपहर 12 बजे के आसपास तेजी आई। खबर लिखे जाने तक शिकायतों की संख्या 2 हजार के पार पहुंच गई थीं। डाउनडिटेक्टर वेबसाइट पर लाइव ग्राफ के अनुसार दोपहर 1-01 बजे तक टोटल 2,333 यूजर्स ने यूपीआई डाउन होने की शिकायत की है।
- **20 दिन में दो बार डाउन हुई यूपीआई सर्विस**- पिछले 26 फरवरी को यूपीआई सर्विस करीब ढाई घंटे डाउन रही थी। तब लोगों को गूगल पे और पेटीएम जैसे एप से अमाउंट ट्रांसफर करने में दिक्कतें हुईं। इस दौरान 10 से ज्यादा बैंकों के यूपीआई व नेट बैंकिंग सर्विसेस पर भी असर पड़ा।

तुलसी के बयान से फिर बाहर आया ईवीएम का जिन्न

● सुरजेवाला बोले- स्वतः संज्ञान लेकर जांच कराए सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। इलेक्ट्रिॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) की हैकिंग को लेकर एक बार फिर राजनीति गर्म हो गई है। कांग्रेस महासचिव रणदीप सुरजेवाला ने हैकिंग को लेकर अमेरिका की खुफिया विभाग की प्रमुख के बयान का हवाला देते हुए पीएम मोदी और निर्वाचन आयोग की चुप्पी पर सवाल उठाते हुए सुप्रीम कोर्ट से इस मामले पर स्वतः संज्ञान लेकर जांच कराने की मांग की है। हालांकि इन सभी बातों के बीच चुनाव आयोग के सूत्रों की तरफ से यह साफ कर दिया गया है कि भारतीय ईवीएम को इंटरनेट या वाईफाई से नहीं जोड़ा जा सकता न ही इसे हैक किया जा सकता है। सुरजेवाला ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर तुलसी गबार्ड के बयान का हवाला देते हुए कहा कि गबार्ड ने सार्वजनिक रूप से ईवीएम की

हैकिंग और उसकी कमजोरियों के मुद्दे को उठाया है। उन्होंने लिखा, वास्तव में गबार्ड ने कहा कि चुनाव के नतीजों में हेराफेरी के लिए ईवीएम का दुरुपयोग किया जा सकता है। सवाल यह है कि मुख्य निर्वाचन आयुक्त और निर्वाचन आयोग इस मामले पर चुप क्यों है। तुलसी गबार्ड ने जो कहा उसे नकारने के लिए आयोग सूत्रों के आधार पर कहानियां क्यों कह रहा है। प्रधानमंत्री और एनडीए सरकार और भाजपा इस मामले पर चुप क्यों है। सुरजेवाला ने कहा कि हमारे निर्वाचन आयोग को और केंद्र सरकार को ईवीएम की हैकिंग और अन्य कमजोरियों के सभी तौर-तरीके और कारण हासिल करने के लिए तुलसी गबार्ड से संपर्क करना चाहिए.. कि आखिर वह कैसे और किस आधार पर यह बात कर रही हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने कहा कि क्या भारत के उच्चतम न्यायालय को इस मुद्दे पर स्वतः संज्ञान नहीं लेना चाहिए.. और यह मानते हुए इसकी गहन जांच नहीं करानी चाहिए कि स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव ही संवैधानिक लोकतंत्र की बुनियादी संरचना है। कांग्रेस नेता के सवालों के पहले चुनाव आयोग के सूत्रों ने तमाम अटकलों को खारिज कर दिया।

भूकंप के झटकों से दहल गया आधा पाकिस्तान

● रिएक्टर स्केल पर 5.8 मापी गई तीव्रता, घरों से बाहर निकले लोग

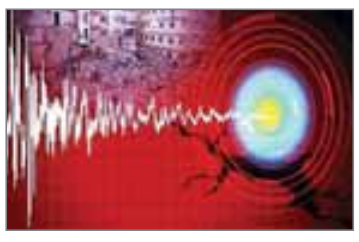

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान में शनिवार दोपहर को भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी ने अपने बयान में बताया है कि रिएक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 5.8 मापी गई है। पंजाब और केपीके प्रांत के बड़े हिस्से में लोगों ने भूकंप के झटके महसूस किए हैं। भूकंप का केंद्र राजधानी इस्लामाबाद के पास रावलपिंडा में था। भूकंप के तेज झटकों से स्थानीय लोगों में दहशत फैल गई और लोग घरों के बाहर निकल आए। पाकिस्तान सरकार की ओर से भूकंप की वजह से जानमाल के किसी नुकसान की जानकारी अभी नहीं दी गई है। पाक वेबसाइट जियो टीवी की रिपोर्ट के मुताबिक, शनिवार दोपहर को पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद, रावलपिंडी, अटक, चकवाल और पंजाब के दूसरे शहरों में झटके में महसूस किए गए।

परिक्रमा

विपक्ष का लक्ष्य परिवार का विकास और संघर्ष मोड में कांग्रेस

अरुण पटेल

प्रबंध संपादक, सुबह सवेरे

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विपक्षी दलों यानी इंडिया ब्लाक पर हमला करते हुए कहा है कि विपक्ष का एकमेव लक्ष्य परिवार का साथ और परिवार का विकास है। मध्यप्रदेश के अशोकनगर में उन्होंने कहा कि सेवा ही ऐसी गंगा है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति डुबकी लगाकर जीवन को सार्थक कर सकता है। मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि आतंकवाद और युद्ध जैसी चुनौतियों का समाधान जैन धर्म के सिद्धान्तों से ही किया जा सकता है। इस अवसर पर उन्होंने लोगों को नौ संकल्प भी दिलाये। वहीं दूसरी ओर प्रधानमंत्री मोदी के गृह राज्य गुजरात में साबरमती के तट से कांग्रेस ने अपने दो दिवसीय अधिवेशन में इस बात का ऐलान किया कि हम आजादी की दूसरी लड़ाई लड़ रहे हैं, उसने यहां न्यायपथ प्रस्ताव पारित कर संघर्ष के पथ पर आगे बढ़ने का संकल्प भी लिया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने संतों के कथन का हवाला देते हुए अशोकनगर में कहा कि यहां पर शोक भी आने से डरता है। मध्यप्रदेश के तत्कालीन संस्कृति मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा ने तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के जिस ड्रीम प्रोजेक्ट के बारे में काफी काम किया था उसे आगे बढ़ाते हुए मोदी ने कहा कि देश में राम पथ गमन का विकास करेंगे जिसका अहम हिस्सा मध्यप्रदेश से गुजरेगा। उनका कहना था कि हम देश में राम पथ गमन का विकास कर रहे हैं। मध्यप्रदेश सरकार भी अभी से उज्जैन सिंहस्थ की तैयारी में जुट गयी है, मध्यप्रदेश तो पहले से ही अजब और गजब है और ऐसे कामों से उसकी पहचान और मजबूत होगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस बात पर जोर दिया कि गरीब की सेवा करना ही सच्चा परमार्थ है और गरीब की आत्मा में रच-बस जाना ही सच्ची मानव सेवा है। जिस प्रकार आनंदपुर धाम में सेवा का केंद्र बना है, हमारी सरकार भी ऐसा ही सेवा केन्द्र बनायेगी और हम गौ-माता की सेवा भी करेंगे। आनंदपुर धाम में यही सीखने को मिला कि गरीबों की सेवा कर ईश्वर के करीब कैसे जाया जा सकता है।

मंदिर धुलवाते हैं भाजपा के लोग

कांग्रेस पार्टी अब निष्क्रिय लोगों की छुट्टी करने वाली है इसका संकेत साबरमती नदी के तट पर 84वें महाधिवेशन में कांग्रेस ने दिये और वह अब अल्पसंख्यकों के साथ दलितों और पिछड़े वर्ग के लोगों को भी अपनी ओर आकर्षित करने का

अभियान छेड़ने वाली है। भाजपा के ऊपर दलितों को लेकर उसकी यानी भाजपा की कथित मानसिकता पर जोरदार शाब्दिक हमला करते हुए कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि राजस्थान में विपक्ष के नेता दलित हैं और वे रामनवमी पर दर्शन करने मंदिर गये तो भाजपा नेताओं ने वहां गंगाजल छिड़का, यह शर्म की बात है। जो दलित और पिछड़े हैं वह भी तो आखिर इंसान ही हैं। जब प्रतिपक्ष के नेता के साथ ऐसा है तो सोचिए जो देहात में रहने वाले दलित हैं उनके क्या हालात होंगे। वहीं दूसरी ओर लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी का कहना था कि भाजपा दलितों को मंदिर नहीं जाने देती और कोई चला गया तो मंदिर धुलवाती हैं, कांग्रेस और भाजपा में यही फर्क है। आर्गनाइजर में वक्फ बिल पास होने पर जो लेख छपा है उसका हवाला देते हुए राहुल गांधी ने कहा कि अब ईसाई समाज की जमीन पर कब्जा करेंगे, यानी यह किसी को नहीं छोड़ेंगे। चूंकि यह मामला दलितों से जुड़ा हुआ है और भाजपा दलितों को रिझाने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने देती इसलिए राजस्थान में पूर्व भाजपा विधायक ज्ञानदेव आहूजा, जिन्होंने अलवर में राम मंदिर में गंगाजल छिड़क कर शुद्धीकरण किया था और एक दिन पहले यहां समारोह में कांग्रेस नेता जूली शामिल

हुए थे। इस पर भाजपा ने नोटिस जारी कर पूर्व विधायक ज्ञानदेव आहूजा को पार्टी से ही निलंबित कर दिया। उसका यह कदम कितना असर दिखाता है यह तो आने वाले समय में ही पता चलेगा, लेकिन कांग्रेस इस मुद्दे को आसानी से छोड़ती नजर नहीं आ रही। इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन यानी ईवीएम पर निशाना साधते हुए मल्लिकार्जुन खरगे ने आरोप लगाया कि भाजपा महाराष्ट्र में धांधली करके चुनाव जीती, पूरी दुनिया बैलेट पेपर पर शिफ्ट हो रही है। उन्होंने चुनाव में धांधली, अमेरिकी टेरिफ, वक्फ संशोधन कानून और लोकतंत्र के मुद्दे को लेकर भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी पर इशारों ही इशारों में निशाना साधा। उनका आरोप था कि आज सरकार हर तरफ दखल बढ़ा रही है, इसलिए कांग्रेस अब आजादी की दूसरी लड़ाई लड़ रही है। पूरी दुनिया ईवीएम से बैलैट पेपर की ओर बढ़ रही है लेकिन हम ईवीएम का उपयोग कर रहे हैं जो एक धोखाधड़ी है।

कांग्रेस के महाधिवेशन में उसके अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे काफी आक्रामक मुद्रा में नजर आये। उन्होंने यह भी कहा कि चुनावी संस्थाएं भी सरकार के कब्जे में हैं, सरकार हर चीज में दखल दे रही है, चुनाव में स्कैम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इलेक्ट्रानिक तकनीक में विकास के साथ ही दुनिया के विकसित देशों ने ईवीएम को छोड़ दिया और बैलेट पेपर अपना लिया है। दुनिया में कहीं भी ईवीएम उपलब्ध नहीं है। उन्होंने मांग की है कि ईवीएम नहीं बैलेट पेपर से चुनाव होने चाहिये। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव का हवाला देते हुए खरगे ने कहा कि विधानसभा व संसद के चुनाव के बीच में अगर वहां 50 लाख मतदाता बढ़ गये तो यह कैसा चुनाव आयोग है, किस तरह से मतदाता सूचियां बनाई गई हैं ? महाराष्ट्र व हरियाणा चुनाव में धोखाधड़ी की गयी है। अहमदाबाद का अधिवेशन इस मायने में भी महत्वपूर्ण रहा कि इसमें मध्यप्रदेश के 90 से ज्यादा नेताओं ने भागीदारी की। मध्यप्रदेश के कांग्रेस नेताओं को साबरमती के अधिवेशन के बाद यह उम्मीद जागी है कि उन्हें भी अब राष्ट्रीय स्तर पर कुछ अहम् जिम्मेदारियां मिलेंगी।

और यह भी.....!

एक ओर जहां कांग्रेस सहित विपक्षी दल ईवीएम पर आरोप लगा रहे हैं तो वहीं एलन मस्क के बाद अमेरिका की नेशनल इंटेलीजेंस डायरेक्टर तुलसी गबार्ड ने भी कहा कि ईवीएम को आसानी से हैक करके चुनाव नतीजों में हेरफेर की जा सकती है, इसलिए पूरे अमेरिका में बैलेट पेपर लागू करने की जरुरत है ताकि मतदाता चुनाव की वैधता पर भरोसा कर सके। वहीं दूसरी ओर भारत के चुनाव आयोग का दावा है कि अब तक के मतदान में पांच करोड़ से ज्यादा वीवीपेट की पुष्टि हो चुकी है जो ईवीएम के वोटों में मिलान में सही पाई गयी हैं। आयोग का दावा है कि हमारी ईवीएम और दूसरे देशों की ईवीएम में अंतर है और उस अंतर को उन्होंने स्पष्ट भी किया।

18 साल के स्टूडेंट की हार्ट अटैक से मौत

इंदौर में आईआईटी की कर रहा था तैयारी, पढ़ाई के दौरान बिगड़ी तबीयत

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में 18 साल के स्टूडेंट की हार्ट अटैक से मौत की बात सामने आई है। वह 11वीं क्लास में था और अपने भाई के साथ किराये के रूम में रहकर आईआईटी की तैयारी कर रहा था। शुक्रवार देर रात तक वह पढ़ाई कर रहा था। अचानक तबीयत बिगड़ने पर उसका भाई और अन्य लोग उसे लेकर अस्पताल पहुंचे। मगर स्टूडेंट की जान नहीं बच सकी। सूचना पर भंवरकुआं पुलिस मौके पर पहुंची और जांच की। पुलिस ने शनिवार को एमवाय में उसका पीएम करवाया। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। दरअसल, ये मामला भंवरकुआं थाना क्षेत्र का है। पुलिस के मुताबिक मृतक पीयूष (18) पिता कमलेश निवासी चितावद है। उसकी मौत के बाद मर्ग कायम कर जांच की जा रही है। एडिशनल डीसीपी क्राइम राजेश दंतोडिया ने बताया कि मृतक पीयूष इंदौर में चितावद क्षेत्र में रहता था और पढ़ाई करता था। शुक्रवार रात को भी पढ़ाई करने के दौरान उसकी तबीयत बिगड़ी, जिसके बाद उसे अस्पताल ले जाया गया। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। शनिवार को उसका पीएम करवाया गया। प्रारंभिक रूप से हार्ट अटैक से मौत होने की बात सामने आई है। फिलहाल इसमें पीएम रिपोर्ट आने का इंतजार किया जा रहा है। मामले में पुलिस ने अपनी जांच भी शुरू कर दी है।

मंडी में सब्जियों की बंपर आवक

टमाटर 5 और लौकी 4 रुपए किलो के भाव

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर की देवी अहिल्याबाई फल एवं सब्जी थोक मंडी में इन दिनों सब्जियों की भरपूर आवक हो रही है। गर्मी का मौसम होने के बावजद सब्जियों के दाम नियंत्रण में हैं। इसका सबसे

बड़ा कारण निमाड़ क्षेत्र में नर्मदा नदी से जुड़ी नहरों का जाल है। सब्जी व्यापारी फारूक राईन के अनुसार, नहरों से किसानों को खेतों में पर्याप्त पानी मिल रहा है। दिसंबर-जनवरी में हुई मावठ ने भी फसलों को लाभ पहुंचाया है। मंडी में महाराष्ट्र और गुजरात से भी सब्जियां आ रही हैं। यहां से उत्तर प्रदेश के कानपुर, झांसी, उरई, कालपी और जलोद की मंडियों तक सब्जियां भेजी जा रही हैं। मंडी में सब्जियों के दाम काफी कम हैं। टमाटर 3 से 5 रुपए किलो में मिल रहा है। लौकी 4 से 5 रुपए, बैंगन 2 रुपए और कद्दू 5 से 6 रुपए किलो में बिक रहा है। पत्ता गोभी 2 से 3 रुपए और गोभी 5 रुपए प्रति नग की दर से उपलब्ध है। हालांकि, निंबू की कीमत 100 से 125 रुपए प्रति किलो है। अन्य सब्जियों में भिंडी 15 से 20 रुपए, मटर 30 से 35 रुपए और अदरक 30 से 32 रुपए किलो में बिक रहे हैं। व्यापारियों के अनुसार हनुमान जयंती और बाबा साहेब अंबेडकर जयंती के कारण आने वाले दिनों में मंडी में आवक कम रह सकती है।

इंदौर में दो दिनों में 3 डिग्री लुढ़का पारा

सुबह हल्की बारिश के साथ छाए बादल, अगले तीन दिन गर्मी से राहत

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में दो दिनों से दिन के तापमान में 2 डिग्री और रात के तापमान में 3 की गिरावट आई है। इससे गर्मी से काफी राहत है। शनिवार सुबह शहर के कई हिस्सों में हल्की बारिश हुई और बादल छाए रहे। फिर 9 बजे हल्की धूप के साथ बादल छाने का दौर भी जारी है। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक अगले तीन दिन इंदौर और आसपास के क्षेत्रों में गर्मी से राहत के आसार हैं। दरअसल इंदौर सहित मध्य प्रदेश में 15 अप्रैल तक तेज गर्मी और लू का अलर्ट नहीं है। मौसम विभाग के मुताबिक अगले 4 दिन बारिश, ओले, आंधी और गरज-चमक की संभावना है। इंदौर में भी 15 अप्रैल तक गर्मी का तेज असर नहीं रहेगा। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन के मुताबिक एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस, दो साइक्लोनिक सर्कुलेशन और दो ट्रफ के एक्टिव होने की वजह से प्रदेश में मौसम बदला हुआ है। 15 अप्रैल तक लू का असर नहीं रहेगा। दिन-रात के पारे में गिरावट भी देखने को मिलेगी।

इसके पूर्व इंदौर में 9 अप्रैल को दिन का तापमान 41.1 (+3) डिग्री और रात का तापमान 26.5 (+7) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था। फिर दो दिनों में दिन के तापमान में 2 डिग्री और रात के

हनुमान जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया

हंसदास मठ- यहां हनुमानजी की पंचमुखी मूर्ति, 10 हाथ, पैरों में विराजे हैं शनिदेव

इंदौर (एजेंसी)। प्राचीन हंसदास मठ में हनुमानजी की अनूठी मूर्ति है। इसमें भगवान के पांच मुख हैं। दस हाथ हैं। हनुमानजी के पैरों में शनिदेव हैं। मठ से जुड़े लोगों के अनुसार यह मूर्ति करीब 325 साल पुरानी है। हनुमानोत्सव धूमधाम से मनाया गया। मूर्ति की खासियत यह भी है कि यह शालिग्राम पत्थर की बनी हुई है। मठ के उत्तराधिकारी महामंडलेश्वर पवनदास महाराज कहते हैं मंदिर में हनुमानजी ने 1997 में पहली बार चोला छोड़ा था, तब इनका पंचमुखी स्वरूप सामने आया था। यहां भगवान चिंताहरण हनुमानजी हैं, जो भक्तों के सभी कष्ट, संकट दूर करते हैं। वर्ष 1700 के आसपास हंसदास महाराज जमात लेकर इंदौर आए थे, तब वे पीलियाखाल स्थित नदी किनारे (वर्तमान मंदिर) में रुके थे। तब उन्होंने यहां नदी किनारे घाट और मंदिर की स्थापना की थी। हनुमानजी और रणछोड़ भगवान की मूर्ति तभी से

विराजमान है। हनुमान जन्मोत्सव पर महामंडलेश्वर रामचरण दास महाराज के सान्निध्य में विशेष अभिषेक और महाआरती हुई।

25 किलो चांदी से तैयार हुआ गर्भगृह, आज इसी में होंगे भगवान के दर्शन

हंसदास मठ पर दो दिनी महोत्सव शुक्रवार सुबह अखंड रामायण पाठ के साथ शुरू हुआ था। इसकी पूर्णाहुति महामंडलेश्वर श्रीमहंत स्वामी रामचरणदास महाराज के सान्निध्य में शनिवार सुबह हुई। इसके अलावा पवित्र नदियों के जल से भगवान का अभिषेक किया गया। करीब 25 किलो चांदी से हनुमानजी का गर्भगृह तैयार किया गया थौ। इसमें शनिवार को भक्तों को दर्शन होंगे। शनिवार सुबह 6 बजे से हनुमानजी का प्राकट्य महोत्सव मनाया जाएगा। 6.30 बजे महाआरती होगी। शाम 7 बजे श्रृंगार दर्शन एवं महाआरती के बाद 56 भोग समर्पित होंगे। शाम 7 से रात 10 बजे तक भक्तों को पंचमुखी हनुमानजी की साक्षी में अभिमंत्रित रक्षा कवच (ताबीज) का वितरण भी किया जाएगा।

यहां बाल स्वरूप में विराजे हैं हनुमानजी

मधुमिलन चौराहा स्थित हनुमानजी का प्राचीन मंदिर। यहां भगवान हनुमानजी की प्राचीन मूर्ति है। मंदिर में एक खासियत यह है कि अंदर दूसरी मूर्ति भी है। इसमें भगवान बाल स्वरूप में हैं और मां अंजनी की गोद में विराजमान हैं। मंदिर में हनुमान जन्मोत्सव पर शनिवार को विशेष उत्सव होगा। महाआरती भी होगी।

हनुमान जयंती पर भगवान महाकाल का मारुती नंदन स्वरूप श्रृंगार

भस्म आरती में भगवान को वैष्णव तिलक, भांग, चन्दन और सिंदूर अर्पित

उज्जैन (एजेंसी)। बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में शनिवार को हनुमान जयंती पर्व पर तड़के चार बजे मंदिर के कपाट खोलने के पश्चात भगवान महाकाल को जल से स्नान कराया गया। इसके बाद पण्डे पुजारियों ने दूध, दही, घी, शहद और फलों के रस से बने पंचामृत से बाबा महाकाल का अभिषेक पूजन किया। भगवान महाकाल को वैष्णव तिलक, भांग, चन्दन और सिंदूर अर्पित कर हनुमान जी स्वरूप में श्रृंगार किया गया। हरि ओम का जल अर्पित कर कपूर आरती कर भस्म अर्पित करने के पश्चात, भगवान महाकाल को ड्रायफ्रूट के साथ भोग अर्पित किया गया।

शेषनाग का रजत मुकुट, रजत की मुंडमाला और रुद्राक्ष की माला के साथ सुगन्धित पुष्पों की माला अर्पित की गई। भगवान महाकाल को फल और मिष्ठान का भोग लगाया गया। भस्म आरती में बड़ी संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने बाबा महाकाल का आशीर्वाद लिया। महा निर्वाणी अखाड़े की और से भगवान महाकाल को भस्म अर्पित की गई।

इंदौर में नाबालिग के विवाह से पहले प्रशासन की कार्रवाई

अक्षय तृतीया पर निकला था मुहूर्त, घोड़ी-बैंड, धर्मशाला संचालकों सहित 4 को नोटिस

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में 29 अप्रैल को अक्षय तृतीया पर एक बाल विवाह करने की तैयारी थी। इसकी जानकारी शनिवार को महिला और बाल विकास विभाग को मिली तो परिजन के आधार कार्ड की मदद से पता ढूंढ़ निकाला। लेकिन परिवार कहीं और शिफ्ट हो गया। परिजन को फोन लगाने पर वे झूठ बोलते रहे। जिसके बाद प्रशासन ने घोड़ी, बैंड, और धर्मशाला संचालकों को ढूंढा। इन लोगों ने प्रशासन को दो टूक जवाब दिया। कहा हम तो अपना धंधा करेंगे, आप परिवार से बात करें। इस पर प्रशासन ने चार सेवा प्रदाताओं को नोटिस थमा दिया। फिर परिजन को ढूंढ़कर उन्हें चेताया। जिस पर वे राजी हुए कि बाल विवाह नहीं करेंगे।

विभाग के कंट्रोल रूम में मिली थी सूचना- मामले में रामनिवास बुधौलिया (महिला एवं बाल विकास अधिकारी) को कंट्रोल रूम से सूचना मिली थी। जिसके बाद फ्लाइंग स्क्वाड के महेंद्र पाठक ने टीम के साथ संबंधित पक्ष की जानकारी निकाली लेकिन पता नहीं

मिला। उन्होंने फोन पर भी परिवार से बात की तो परिवार गलत जानकारी देता रहा। इस पर उन्होंने परिवार के मुखिया के आधार कार्ड पर दिए गए फोटो के माध्यम से जांच शुरू की। पता चला कि परिवार शंकर कुमार का बगीचा में रहने चला गया है। जिसके बाद टीम में शामिल पुलिस के राजकुमार खंडेलवाल, देवेंद्र सिंह सोलंकी और देवेंद्र पाठक वहां पहुंचे। यहां लड़के पक्ष से बात की तो पता चला कि लड़की 17 वर्ष और लड़का 20 वर्ष का है। उन्हें बताया कि यह बाल विवाह का मामला है और अपराध है। पहले तो वे शादी टालने के लिए राजी नहीं हुए। फिर माता-पिता को बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम की जानकारी देकर समझाया कि वे बच्चों के बालिग होने तक विवाह निरस्त करने पर राजी हो गए।

इंदौर में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स कार्बन-न्यूट्रल आर्किटेक्चर सम्मेलन

देशभर के 2 हजार से ज्यादा आर्किटेक्ट होंगे शामिल, एक्जीबिशन का उद्घाटन होगा

इंदौर (एजेंसी)। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स (आईआईए) एमपी चैप्टर द्वारा देश की सबसे बड़ी आर्किटेक्चरल कॉन्फ्रेंस 'आईआईए नैटकॉन 2025'11 से 13 अप्रैल तक आयोजित की जा रही है। तीन दिनी इस सम्मेलन के पहले दिन 11 अप्रैल को भोपाल में सेशन्स आयोजित किए गए थे। 12 अप्रैल की शाम इंदौर में सेशन्स शुरू हुए। समापन 13 अप्रैल को इंदौर में ही होगा। इस कॉन्फ्रेंस में भाग लेने के लिए अमेरिका, यूके और जर्मनी सहित विश्वभर के शीर्ष आर्किटेक्ट्स इंदौर पहुंचेंगे। साथ ही देशभर के 2 हजार से अधिक आर्किटेक्ट्स भी इसमें शामिल हो रहे हैं। आईआईए के वाइस प्रेसिडेंट आर्किटेक्ट जितेंद्र मेहता ने बताया कि कॉन्फ्रेंस की थीम 'ट्रांसम' है, जिसका अर्थ होता है सेतु। इस थीम के तहत आयोजन के दौरान होने वाले 15 से अधिक सेशन्स में पारंपरिक और आधुनिक वास्तुकला के बीच सेतु स्थापित करने का प्रयास किया जाएगा। चेयरमैन आर्किटेक्ट नितिन

घुले ने बताया कि आईआईए एमपी चैप्टर द्वारा आयोजित यह पूरा सम्मेलन कार्बन न्यूट्रल है। पूरी कांफ्रेंस में आरआरआर यानि रिड्यूस, रियुस और रिसाइकल को फॉलो किया जाएगा। सस्टेनेबल डिजाइन और अर्बन प्लानिंग पर भी चर्चा होगी। साथ ही एक कॉलेज में बायो पार्क की स्थापना की जाएगी, जिसमें औषधीय और फलदार प्रजातियों के 300 से अधिक पौधे लगाए जाएंगे। 12 अप्रैल को भोपाल और इंदौर के मध्य स्थित अरण्य रिसॉर्ट में आर्किटेक्चरल फेस्टिवल रखा गया था। यहां आर्किटेक्ट सविता राजे, निपुण प्रभाकर और वाजिद खान के हैं। इसके बाद ट्रांसम क्विज और की हंट रखा गया है।

इंदौर के पितृ पर्वत पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए सीएम यादव , बोले...

यहां हनुमान जी का अद्भूत स्वरूप

इंदौर (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 12 अप्रैल को इंदौर पहुंचे। सीएम भोपाल स्टेट हैंगर से इंदौर एयरपोर्ट पहुंचने के बाद सीधे पितृ पर्वत पहुंचे। पितृ पर्वत पर आयोजित हनुमान जयंती के कार्यक्रम में शामिल हुए। एयरपोर्ट पर मीडिया से चर्चा में सीएम मोहन यादव ने इंदौर में कहा कि- आज हनुमान जयंती की मेरी ओर से पूरे प्रदेश को बधाई। आज एक ओर संयोग अच्छा है। हनुमान जयंती के पावन अवसर पर मैं इंदौर में गोशाला का भूमिपूजन करने आया हूं। गो-माता के सरंक्षण और संवर्धन को लेकर हमारा अभियान जारी है। इंदौर, जबलपुर, भोपाल और ग्वालियर हमारी लगभग सभी नगर निगम 10 हजार से ज्यादा गो माता को पाल रही है। डॉ. अम्बेडकर की जयंती के अवसर पर हमने गोमाता के लिए एक नई योजना डॉ. अम्बेडकर के

नाम पर शुरू की है। हम चाहते हैं कि मध्यप्रदेश में दूध का उत्पादन 9त्न से बढ़कर 20त्न हो। इसके लिए कल केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह भोपाल आ रहे हैं। हमे उम्मीद है कि दूध उत्पादन में हमारा प्रदेश देश का नंबर 1 राज्य बनेगा। पितृ पर्वत पर हनुमान जी के दर्शन के बाद सीएम ने कहा कि पितृ पर्वत पर हनुमान जी का स्वरूप अद्भुत है। यह देवता तो ऐसे हैं कि जो मांगों वह सब मिलता है। हमारी सरकार ने तय किया है कि जो गोवंश महानगरों में किसी कारण से कष्ट में है, उनका गोशाला में प्रबंधन किया जाएगा। इसके लिए आज नई गोशाला का भूमिपूजन होने जा रहा है। बता दें कि इंदौर के पास महू के आशापुरा में 10 हजार गायों के लिए नई गोशाला का निर्माण किया जा रहा है। 17 हेक्टेयर में तैयार होने वाली गोशाला में प्राकृतिक वातावरण में गायों को रहने व घूमने के लिए पर्याप्त जगह मिलेगी। इसके रखरखाव का जिम्मा नगर निगम का होगा। लेकिन इसमें संत समाज का सहयोग भी लिया जाएगा। गोशाला के निर्माण का काम भी नगर निगम द्वारा किया जाएगा।

महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा है कि ग्राम आशापुरा में नगर निगम द्वारा विकसित की जाने वाली गोशाला न केवल सबसे बड़ी गोशाला होगी, बल्कि सबसे ज्यादा व्यवस्थित और बेहतर गोशाला होगी।

बैसाखी पर विशेष

योगेश कुमार गोयल
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

कणकां दी मुक गई राखी, ओ जट्टा आई बैसाखी

उत्तर भारत में, विशेषतः पंजाब-हरियाणा में गिद्दा और भांगड़ा की धूम के साथ मनाए जाने वाले बैसाखी पर्व के प्रति भले ही काफी जोश देखने को मिलता है लेकिन वास्तव में यह त्यौहार विभिन्न धर्म एवं मौसम के अनुसार देश के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग नामों से मनाया जाता है। पश्चिम बंगाल में इसे 'नबा वर्ष' के नाम से मनाया जाता है तो केरल में 'विशू' नाम से तथा असम में यह 'बीहू' के नाम से मनाया जाता है। बंगाल में 'पोइला बैसाखी' भी कहा जाता है और वे इसे अपने नए साल की शुरुआत मानते हैं। हिन्दू धर्म की पौराणिक मान्यताओं के अनुसार हजारों साल पहले इसी दिन मां गंगा का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था।

कृषि प्रधान देश भारत में बैसाखी पर्व का संबंध फसलों के पकने के बाद उसकी कटाई से जोड़कर देखा जाता रहा है। इस पर्व को फसलों के पकने के प्रतीक के रूप में भी जाना जाता है। वैसे विशेष तौर पर पंजाब का प्रमुख त्यौहार माना जाने वाला यह त्यौहार केवल पंजाब ही नहीं बल्कि देशभर में लगभग सभी स्थानों पर खासतौर से पंजाबी समुदाय द्वारा बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। सिख भाई बैसाखी से ही नए साल की शुरूआत मानते हैं और इसलिए भी एक-दूसरे को बैसाखी की बधाईयां देते हैं। पंजाब देश का प्रमुख अन्न उत्पादक राज्य है, जब यहां किसान अपने खेतों को फसलों से लहलहाते देखता है तो खुशी से झूम उठता है। खुशी के इसी आलम में शुरू होता है गिद्दा और भांगड़ा का मनोहारी दौर। यही वजह है कि विशेष रूप से पंजाब में बैसाखी के पर्व पर गिद्दा और भांगड़ा के मनोहारी कार्यक्रम न हों, यह हो ही नहीं सकता। यहां ढ़ोल-नगाड़ों की धुन पर पारम्परिक पोशाक में युवक-युवतियां नाचते-गाते और जश्न मनाते हैं तथा सभी गुरूद्वारों को फूलों तथा रंग-बिरंगी रोशनियों से सजाया जाता है।

उत्तर भारत में, विशेषतः पंजाब-हरियाणा में गिद्दा और भांगड़ा की धूम के साथ मनाए जाने वाले बैसाखी पर्व के प्रति भले ही काफी जोश देखने को मिलता है लेकिन वास्तव में यह त्यौहार विभिन्न धर्म एवं मौसम के अनुसार देश के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग नामों से मनाया जाता है। पश्चिम बंगाल में इसे 'नबा वर्ष' के नाम से मनाया जाता है तो केरल में 'विशू' नाम से तथा असम में यह 'बीहू' के नाम से मनाया जाता है। बंगाल में 'पोइला बैसाखी' भी कहा जाता है और वे इसे अपने नए साल की शुरुआत मानते हैं। हिन्दू धर्म की पौराणिक मान्यताओं के अनुसार हजारों साल पहले इसी दिन मां गंगा का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। इसीलिए इस दिन गंगा आरती करने तथा पवित्र नदियों में स्नान करने की भी परम्परा रही है।

बैसाखी पर्व के साथ भारतीय इतिहास की कई महत्वपूर्ण घटनाएं जुड़ी हैं। दरअसल इसी दिन अर्थात् 13 अप्रैल 1699 को सिखों के 10वें तथा अंतिम गुरू गोबिन्द सिंह जी ने आनंदपुर साहिब में 'खालसा पंथ' की स्थापना की थी। इस पंथ की स्थापना करने का उनका प्रमुख उद्देश्य था लोगों को मुगल शासकों के अत्याचार व शोषण से मुक्ति दिलाना तथा इन अत्याचारों का सामना करते हुए देश की एकता एवं अखंडता की रक्षा करना। गुरू गोबिन्द सिंह कलम के साथ-साथ तलवार के भी उपासक थे और उनके पंच प्यारों में सभी जातियों के लोग शामिल थे। उन्होंने अन्याय, विरोध एवं पाखंड के सर्वनाश की प्रेरणा और मानव जाति को एकता का संदेश देते रहने में ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर दिया था।

बताया जाता है कि लाहौर पर विजय प्राप्त करने के बाद वापस लौटे 'शेरे पंजाब' महाराणा रणजीत सिंह का राजतिलक भी बैसाखी के दिन ही हुआ था। महाराजा रणजीत सिंह ने पंजाब में सिख राज्य की नींव रखी थी और अंग्रेजी शासन की जड़ें खोखली करने के लिए जीवन पर्यन्त कड़ा संघर्ष करते रहे। उन्होंने अपनी सरकार में विभिन्न सैनिक एवं असैनिक पदों पर सभी धर्मों के लोगों को नियुक्त किया था। कहा जाता है कि अहमद शाह अब्दाली पंजाब को अफगानिस्तान में मिलाना चाहता था तो उसे मुंहतोड़ जवाब देने के लिए बैसाखी के ही दिन 13 अप्रैल 1749 को जनरल जस्सा सिंह अहलूवालिया ने 'खालसा दल' का गठन किया था और सिखों को एक नारा दिया था, ''वाहे गुरू जी दा खालसा, वाहे गुरू जी दी फतेह।'' यह नारा आज 275 वर्षों बाद भी उतना ही प्रासंगिक है और लोगों में एक अद्भुत उत्साह तथा जोश का संचार करता है।

13 अप्रैल 1875 को बैसाखी के ही दिन विश्व प्रसिद्ध संत स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'आर्य समाज' की स्थापना की थी। स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित 'आर्य समाज' नामक संस्था को आज भी सामाजिक क्रांति का प्रतीक माना जाता है।

सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संदर्भों के अलावा बैसाखी के त्यौहार का देश के स्वतंत्रता संग्राम से भी गहरा संबंध है। 13 अप्रैल 1919 का बैसाखी का दिन आज भी चीख-चीखकर अंग्रेजों के जुल्मों की दास्तान बखान करता है। दरअसल रोलट एक्ट के विरोध में अपनी आवाज उठाने के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आव्हान पर इस दिन हजारों लोग जलियांवाला बाग में इकट्ठा हुए थे क्योंकि 'रोलट एक्ट' कानून के तहत न्यायाधीशों और पुलिस को किसी भी भारतीय को बिना कोई कारण बताए और उन पर बिना कोई मुकद्दमा चलाए जेलों में बंद करने का अधिकार दिया गया था। महात्मा गांधी के आव्हान पर भारतवासियों में इस कानून के खिलाफ जबरदस्त आक्रोश उमड़ पड़ा था। इस काले कानून के विरोध में अमृतसर के जलियांवाला बाग में हजारों लोगों की एक विशाल जनसभा हुई थी लेकिन अंग्रेज सरकार ने बहुत खतरनाक षड्यंत्र रचकर जलियांवाला बाग में एकत्रित हुए लोगों को चारों ओर से घेरकर बिना किसी पूर्व चेतावनी के अंधाधुंध गोलियां बरसानी शुरू कर दी। उस दर्दनाक हत्याकांड में सैंकड़ों भारतवासी शहीद हो गए थे। हालांकि बाद में उस नृशंस हत्याकांड के सूत्रधार जनरल डायर की हत्या कर उसका बदला ले लिया गया था।

बैसाखी को सूर्य वर्ष का प्रथम दिन माना गया है क्योंकि इसी दिन सूर्य अपनी पहली राशि मेष में प्रविष्ट होता है और इसीलिए इस दिन को 'मेष संक्रांति' भी कहा जाता है। यह मान्यता रही है कि सूर्य के मेष राशि में प्रवेश करने के साथ ही सूर्य अपनी कक्षा के उच्चतम बिन्दुओं पर पहुंच जाता है और सूर्य के तेज के कारण शीत की अवधि खत्म हो जाती है। इस प्रकार सूर्य के मेष राशि में आने पर पृथ्वी पर नवजीवन का संचार होने लगता है।

बैसाखी पर्व के संबंध में कुछ अंधविश्वास भी प्रचलित हैं। माना जाता है कि यदि बैसाखी के दिन बारिश होती है या आसमान में बिजली चमकती है तो उस साल बहुत अच्छी फसल होती है। इस प्रकार देखा जाए तो बैसाखी का त्यौहार हमारे लिए खुशियों का त्यौहार तो है ही लेकिन इसके साथ-साथ यह दिन हमारे स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास की कुछ कड़वी यादें भी संजोये हुए है। बैसाखी का पवित्र दिन हमें गुरू गोबिन्द सिंह जैसे महापुरूषों के महान आदर्शों एवं संदेशों को अपनाने तथा उनके पद्चिन्हों पर चलने के लिए प्रेरित करता है और हमें संदेश भी देता है कि हमें देश में शांति, सद्भावना एवं भाईचारे के नए युग का शुभारंभ करने की दिशा में सार्थक पहल करनी चाहिए।

कविता

क्या दूँ नाम प्रिये

डॉ. वीरेंद्र प्रसाद

मेरे लिये तेरा निश्चल प्यार
क्या दूँ नाम प्रिये
सपने में आती हो तुम
लेकर नव ललाम प्रिये।

बढ़ते गये कदम मेरे
चाहा जिस डगर न जाना
खींच कर लाते गये तुम
हमसफर सफर न जाना
नेह की बरसात में, मैं नहाया
यह कैसा संग्राम प्रिये
मेरे लिये तेरा निश्चल प्यार
क्या दूँ नाम प्रिये।

क्या चाहा था और मुझे
अब क्या-क्या है मिला
साथ तुम्हारा है तो
मुझको किससे क्या गिला
मृगतृष्णा नहीं, सार्थक है
जीवन है अभिराम प्रिये
मेरे लिये तेरा निश्चल प्यार
क्या दूँ नाम प्रिये।

साथ मेरा दोगे कब तक
कौन ज्योतिषी बता पाये
जान पाऊंगा तभी जब
वक्त मुझ पर मुस्कुराये
और चाह पर मेरी भरोसा
कर फूंकोगे प्राण प्रिये
मेरे लिए तेरा निश्चल प्यार
क्या दूँ नाम प्रिये।

एक अर्न्तद्वन्द मेरे मन में
फिर भी है कुनमुनाता
क्या गलत है क्या सही,
काश पहले जान पाता
तुम मेरे हो, इसी सोच पर
अब लगा दो विराम प्रिये
मेरे लिये तेरा निश्चल प्यार
क्या दूँ नाम प्रिये।

लघुकथा

रामेश्वरम तिवारी

आदि-इत्यादि

दुनिया के सनातनी और पुरातन कहे जाने वाले देश में विभिन्न धर्मावलंबियों के बीच रोज-रोज की खटपट और खींचतानी को देख-सुनकर एक दिन आर्यावृत के धर्मी सम्राट ने अपने सभासदों की बैठक बुलाई और उनके समक्ष अपनी चिंता ज़ाहिर की।

गुरु घोटालों ने सम्राट को विशाल स्तर पर एक सर्वधर्म सम्मेलन आयोजित करने का सलाह दी। जिसमें देश-दुनिया के नामी-गिरामी धर्माचार्यों को आमंत्रित करने और उनके द्वारा फ़साद पर कोई सर्वमान्य समाधान की बात को दोहराया गया।

सम्राट को विचार पसंद आया और उसने अपनी ओर से आयोजन को हरी झंडी दिखा दी। बस! फिर क्या था। देखते ही देखते गुरु घंटालों ने देश की राजधानी में सभा की भव्य तैयारियाँ शुरू कर दीं। नियत दिनांक और समय पर सर्वधर्म सभा की शुरूआत हुई। सभी धर्माचार्यों ने सुबह से लेकर शाम तक अपने-अपने धर्म का बढ़-चढ़कर गुण-गान किया, पर समाज में विभिन्न समुदायों के बीच बढ़ती हुई धर्मांधता को लेकर किसी ने न एक शब्द कहा, न ही चिंता ज़ाहिर की।

सप्ताह भर बाद गुरु घोटालों ने सर्वधर्म सभा पर सम्राट के समक्ष अपना प्रतिवेदन पेश किया जिसे पढ़कर सम्राट ने अपना सिर पीट लिया। चूँकि प्रतिवेदन में वह सब बातें कही गई थी जिसे सम्राट जानते थे। जैसे, धर्म का अर्थ क्या है, जीवन में उसका महत्व और उपादेयता क्या है, आदि-इत्यादि।

कविता

खबाव हो गया हूं मैं

कमलेश कुमार दीवान

तुम्हे जीते हुए उन्ही यादों में खुद एक ख्बाव हो गया हूं मैं
यादों का वजन इतना कि खुद माल असबाब हो गया हूं मैं।
नदी को पार करने में धार लहरों किनारों से भी उलझा हूं
सभी की आश में एक पतवार खुद एक नाव हो गया हूं मैं।
मेरे जेहन में थे मां पिता जी गांव घर गलियां खेत खलिहान
बरसों पहले आया शहर अब खुद एक गांव हो गया हूं मैं।
बहुत धोखा मिला है फिर भी जिंदगी बड़े विश्वास से जी है
यूं उगाई स्वार्थ की फसलें खुद एक दो-आब हो गया हूं मैं।
करें क्या अब भी आती याद जो बीता कल गया 'दीवान'
घर है अपने लोग सब हैं मगर खुद एक घाव हो गया हूं मैं।

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे
लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं ।

क्रिकेट की पृष्ठभूमि पर एक अच्छा स्पोर्ट्स थ्रिलर

लोकप्रिय खेल क्रिकेट की पृष्ठभूमि पर बुना गया एक अच्छा स्पोर्ट्स थ्रिलर है - 'टेस्ट' । अमेजन प्राइम वीडियो की फेमस वेब सीरीज ' द फैमिली मैन' के लेखक सुमनकुमार की लिखी कहानी पर शशिकांत ने यह स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म बनाई है। यह फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज हो गई है। इस फिल्म की सबसे बड़ी खूबी इसकी स्टार कास्ट है- आर माधवन, नयनतारा और सिद्धार्थ। अभिनय की इस त्रिधारा ने इस फिल्म में दर्शकों को आस्वाद के विलक्षण जल? से अभिसिक्त किया है।आर माधवन और विजय सेतुपति को लेकर शानदार तमिल फिल्म - ' विक्रम वेधा ' बनाने वाले निर्माता एस शशिकान्त अब निर्देशन के मैदान में उतरे हैं और? वे इस विधा में अभी तक निपुण भी साबित हुए हैं । माधवन और शशिकान्त के बीच जो भी केमिस्ट्री, फिजिक्स और जियोग्राफी है, वह कमाल की है।

कहानी क्रिकेट के एक ऐसे मैच की है, जिसके बारे में उस समय के दो धुरन्धर खिलाड़ियों को पता चल जाता है कि यह मैच सटोरियों ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके फिक्स कर दिया है और भारत को यह मैच हारना है, लेकिन, इन दोनों ने यह मैच भारत को जिता दिया । यह फिल्म उस मैच की लोकेशन से कुछ ही दूर भारत के चेपक स्टेडियम में चल रहे एक टेस्ट मैच की पृष्ठभूमि में बुनी गई है।

अर्जुन नाम का एक बेहतरीन खिलाड़ी है। टीम मैनेजमेंट उसे रिटायर करने पर तुला है। वह अपना आखिरी मैच शान से जीतना चाहता है। लेकिन, सब कुछ वैसा ही होता, जैसा हम सोचते हैं तो फिर आखिर हमारे जीवन का टेस्ट कैसे होगा ? 'फर्जी ', ' गन्स एण्ड गुलाब 'और? ' फेमिली मैन ' लिखने वाले सुमन कुमार ने फिल्म के निर्देशक एस शशिकान्त के साथ मिलकर क्रिकेट की पृष्ठभूमि में एक अच्छा थ्रिलर लिखा है।

यह कहानी मगर क्रिकेट मेच के फिक्स होने भर की ही कहानी नहीं है ।फिल्म का असली ड्रामा अर्जुन और सरवनन को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में सामने आता है। सरवनन की पत्नी के किरदार में यहां है नयनतारा। उनके चरित्र का नाम कुमुदा है। वह उसी स्कूल में पढ़ाती हैं, जहां अर्जुन का बेटा आदित्य पढ़ता है। कुमुदा के पिता कभी अर्जुन के कोच थे। कुमुदा अपने पहले क्रश अर्जुन को अब भी मानती है। अर्जुन उसे मिलता है तो पहचानता भी नहीं है। आदित्य पर कुमुदा खूब प्यार लुटाती है। और अपना बच्चा पाने की अपने पति सरवनन से लगातार जिद करती है, जिसका स्पर्म काउण्ट अब जाकर नौ महीने के इलाज के बाद ठीक हुआ है। सिनेमा बस इतना ही प्रोग्रेसिव होता रहना चाहिए कि दम्पती को बच्चा न हो रहा तो दोष बस औरत में ही न निकाले। यहां इलाज मर्द का हो रहा है। और, इस मर्द की मर्दानगी की चोट तब लगती है जब उसकी पत्नी उसे आईवीएफ के पाँच लाख रुपये न जुटा पाने के लिए ललकारती है। सरवनन ने पचास लाख रुपये का तो लोन ले रखा है। ये कर्ज देने वाले उसे तलाशते फिर रहे हैं और उसके पास पैसा है नहीं।

नेशनल अवार्ड के हकदार माधवन का अभिनय इस फिल्म में उभरकर सतह पर आया है ।आर. माधवन से पहले श्रीदेवी, जयाप्रदा जैसी पैन इंडियन हीरोइनें तो तमाम हुईं, पैन इंडिया हीरो पहले वह ही हैं। 'अलाई पायुथे' में मणि रत्नम ने उन्हें पहचाना, 'मिन्नाले' में गौतम वासुदेव मेनन ने उन्हें अलग पहचान दी ।बीते तीन दशक से सिनेमा में तरह तरह की भूमिका करते आ रहे माधवन के लिए इस फिल्म में सरवनन की भूमिका एक चुनौती थी जिसे करने के बाद वह खुद भी कई रातों को सो नहीं पाए होंगे। इस फिल्म में उन्होंने अभिनय का एक नया आयाम क्षतय किया है। माधवन को नेशनल अवार्ड दिला सकता है, उनका यह अभिनय। इधर नयनतारा जिनका मूल नाम डायना मरियम कूरियन है । गले में लम्बी माला लटकाए कोई हीरोइन साड़ी में कितनी खूबसूरत दिख सकती है, उसका एक अलग ही पैमाना नयनतारा ने सिनेमा में सेट किया है । नयनतारा का फ्रेम में होना ही सिनेमा की खूबसूरती बढ़ा देता है।

विराॅजसिंह गोहिल इस फिल्म के सिनेमैटोग्राफर है। विराज फिल्मों के नामवर सिनेमैटोग्राफर में गिने जाते हैं ।फोटोग्राफी के शौकीनों को तो यह फिल्म सिर्फ विराज के वाइड एंगल लेंस से बने फ्रेम देखने के लिए ही देखनी चाहिए।

परसाई और शरद जोशी की परंपरा की झलक

पुस्तक समीक्षा

ओम वर्मा
समीक्षक

ब्रजेश कानूनगो आज के दौर के व्यंग्यकारों में एक चर्चित नाम है। जिस दौर में शरद जोशी अपने उरूज पर थे, उस दौर में चुपचाप अपना काम करते हुए जिन चंद व्यंग्यकारों ने अपना ध्यान आकृष्ट किया था, ब्रजेश कानूनगो उन में से एक हैं। उन्हें रायपुर का हरिशंकर परसाई व्यंग्य सम्मान मिलना और मुंबई विश्वविद्यालय द्वारा अपने बीए के पाठ्यक्रम में उनका व्यंग्य शामिल किया जाना उन्हें एक श्रेष्ठ व्यंग्यकार के रूप में मान्यता तो देता ही है, युवा व नए व्यंग्यकारों के लिए एक प्रेरणा-पुंज का कार्य भी करता है। बेशक उन्होंने अन्य कई लेखकों की तरह अपनी शुरुआत 'पत्र, संपादक के नाम' से की थी। इन पत्रों में उनका सशक्त वैचारिक पक्ष झलकता था और बात कहने का वक्र ढंग देखकर लगने लगा था कि यह इंजन 'पत्र, संपादक के नाम' स्तंभ के नैरो गेज के लिए नहीं, बल्कि ब्रॉड गेज के ट्रेक के लिए बना है। और यह हुआ भी। नईदुनिया के अंतिम पत्र कॉलम की शुरुआत कार्टून के साथ उनके व्यंग्यात्मक शैली में लिखे पत्र से ही हुई। इसी पत्र में पहले 'मध्य' नाम से व्यंग्य कॉलम शुरू हुआ। बाद में इसे 'अधबीच' नाम से शुरू किया गया जिसका श्रीगणेश ब्रजेश के व्यंग्य से ही हुआ।

अब बात इस संकलन की। जैसा कि शीर्षक से ज़ाहिर है, इसमें उन्होंने अपने अब तक के रचनाकाल से चुन-चुनकर 48 व्यंग्य रचनाएँ पाठकों के लिए प्रस्तुत की हैं। मैं उनके पहले व्यंग्य से लेकर अब तक की संपूर्ण व्यंगयात्रा से अवगत हूँ व लगभग सभी रचनाएँ मैंने पढ़ी हैं, इसलिए मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि उन्होंने अपने विशाल सृजन-कुंज से सभी रंग के, अलग अलग कालखंड में लिखे व सर्वाधिक सराहे गए व्यंग्य पुष्प का एक खूबसूरत साहित्यिक इकेबाना प्रस्तुत किया है। सभी व्यंग्य रचनाओं पर अगर कुछ कहूँगा तो बात बहुत दूर तलक जाएगी, इसलिए कुछ चुनिंदा रचनाओं पर अपनी बात कहना चाहूँगा।

पहला व्यंग्य है 'सफर में समाधि'। यह कई जगह प्रकाशित हो चुका है और कई गोष्ठियों में पढ़ा और सराहा भी जा चुका है। यह हर व्यक्ति का अनुभव है कि जब मध्यप्रदेश में राज्य परिवहन निगम की बसें चलती थीं तब टिकट कंडक्टर से टिकट लेकर बचे हुए पैसे वापस लेना एक बहुत मुश्किल काम होता था। यही इस व्यंग्य का विषय भी है। पहली नज़र में यह लग सकता है कि अब न तो परिवहन निगम है और न ही बस में टिकटों का चलन। टिकट अब ऑनलाइन या यूपीआई द्वारा किया जाता है जिसमें वास्तविक राशि का भुगतान किया जा सकता है। ऐसे में इस व्यंग्य की प्रासंगिकता क्या है? लेकिन व्यंग्य को ध्यान से पढ़ें तो समझा जा सकता है कि व्यंग्यकार का निशाना कोई कंडक्टर नहीं है, बल्कि वह शक्ति, वह व्यवस्था या वह एजेंसी है जिसे आपसे लिया पैसा लौटाने की कोई चिंता नहीं है और चिंतित वह है जिसका पैसा अन्य पक्ष हड़पकर बैठा है। प्रहार तो भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति या उसके अड्डे पर है। लक्ष्य लंकेश की नाभि पर है।

व्यंग्य 'आदमी और पुतला' भी चिंतन की कई परतें उजागर करता है। जैसे-÷एक पुतला युगों से एक ही दिशा में अपनी उँगली उठाए राह दिखा रहा है। उसे इस बात की चिंता नहीं है कि अब लोग किसी और रास्ते पर चल पड़े हैं...जिन्हें आदमी होना चाहिए वे धीरे धीरे पुतलों में बदलते जा रहे हैं। ऐसे ही तमाम संकलित व्यंगों में से कुछ चुनिंदा पंक्तियाँ यहाँ दे रहा हूँ जिनमें लेखक का चिंतन भी है और व्यंग्य की चुटकी भी है-

÷विकास के लट्टू पर जो ज़ोर हम दे रहे हैं उसकी बहुत सारी ऊर्जा कहाँ लुप्त हो जाती है। जिस रफ्तार से लट्टू घूमना चाहिए क्यों नहीं घूम पाता? (विकास का लट्टू) हिंदी के ताले में अँगरेजी की चाबी ऐसी ही अटकी पड़ी है। न ताला खुल रहा है न चाबी निकल पा रही है। (ताले और चाबियाँ) ÷व्यापम संस्था नहीं, संस्कार है साधुराम जी! जैसे कभी कहा जाता था कि ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, उसी तरह व्यापम तंत्र की रग-रग में समाविष्ट हो गया है...! (हंगामे का संस्कार)

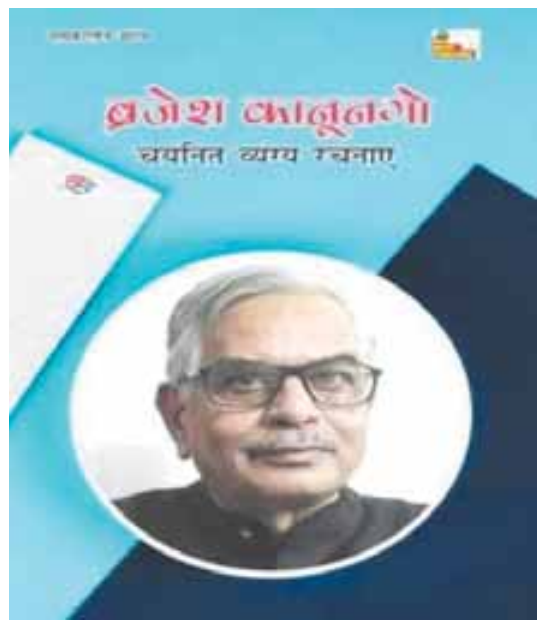

गाँव-कस्बे जिस तरह कांक्रीट के जंगलों में तब्दील होते जा रहे हैं, उस पर व्यंग्य 'बायपास के पास' में प्रहार है। 'लेखक से चुराइटर तक' में चौर्य रचनाकर्मियों की ख़बर ली गई है। 'ऐनक के बहाने' वह व्यंग्य है जिसे मुंबई वि.वि. ने बीए के पाठ्यक्रम में लगाया है। इसमें उनके प्रिय पात्र साधुराम जी के साथ चर्चा के माध्यम से व्यंग्य की शैली में विसंगतियों पर उनका दार्शनिक चिंतन सामने आता है। 'उत्तेजना का कारोबार' में टीवी चैट शो में होने वाले बहस-मुबाहिसों के गिरते स्तर, उसमें होने वाली काँव-काँव व प्रवक्ता की भूमिका पर तंज़ करते हुए वे कहते हैं- सवालों से लबालब टीवी बहस के प्यालों में उत्तरों की एक बूँद भी क्यों नहीं मिलती? एक मात्र यही सवाल हर वक्त मन में घंटी बजाता रहता है। 'सूत्रों के हवाले से' रचना में सनसनी फैलाने वाली अपुष्ट खबरों को सूत्रों का हवाला देकर पेश करने की प्रवृत्ति पर अच्छा व्यंग्य बन पड़ा है।

'वाट्सएप पर महाकवि' शीर्षक व्यंग्य में किसी के भी नाम से किसी की भी रचना घुमाते रहने वाले अति उत्साहियों को बखूबी उजागर किया है। बाज़ारीकरण और आधुनीकीकरण के इस दौर में अँगरेजी किस तरह हिंदी को पदच्युत करने पर तुली है कैसे हमारी अपनी नई पीढ़ी जड़ों से कटती जा रही है, इस चिंता पर 'हिंदी और मेरा आलाप' में चिंतन है। मुहावरों की प्रासंगिकता और उत्पत्ति पर 'और वे घोड़े बेचकर सो गए' एक बढ़िया साहित्यिक व्यंग्य है। 'कुत्ते की समाधि और बारिश में भीगती बकरी' बहुत ही बढ़िया करुण व्यंग्यकथा है। संकलन के अंतिम व्यंग्य 'कोष्ठकों में विचारधारा' में दलों के होते जाते विघटन पर प्रहार है।

संकलन ब्रजेश कानूनगो के अभी तक की संपूर्ण व्यंग्य-यात्रा के सभी आयामों का पूर्ण व सही प्रतिनिधित्व करता है। उनके पास विषयों की विविधता है, नितांत मौलिक चिंतन है और सहज-सरल व संप्रेषणीय भाषा है। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि प्रतिनिधि व्यंग्यों के इस संकलन को पढ़कर पाठक के मन में विश्वास पुख्ता होता है कि परसाई-शरद जोशी के बाद व्यंग्य की धारा अभी सूखी नहीं है।

पुस्तक - ब्रजेश कानूनगो की चयनित व्यंग्य रचनाएँ
प्रकाशक - न्यू वर्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली
मूल्य -225 रुपए

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) -विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

इलेस्ट्रेशनः भाव, विचार, रेखाओं का समृद्ध संसार

कथा चित्रण में चित्रों के माध्यम से किसी कथा, किसी बात को, किसी संदेश को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें पौराणिक, ऐतिहासिक, लोककथाएँ, सामाजिक संदेश सहित सभी पक्ष शामिल हो सकते हैं। कथा चित्रण आदि से अन्त तक रही है और रहेगी। गुफाओं, मंदिरों, ताड़पत्रों, पाण्डुलिपियों, पारंपरिक कपड़ों या अन्य किसी भी धरातल पर भी इसकी उपस्थिति को महसूस किया जा सकता है। कथा चित्रण और संस्कृति पर चर्चा के पूर्व संस्कृति पर दृष्टिपात बहुत जरूरी है।

भारत विभिन्न मतों, धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों, संस्कारों के संगम का देश है। जहां सबकी अपनी शैली, बोली, भाषा, लोककला है और विशेष बात ये है कि सभी धरातल के मजबूती के मामले में सशक्त एवं संपन्न है। यहां के सांस्कृतिक विरासत में कथा चित्रण, काव्य, लोककला, लोकनृत्य एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह न केवल कहानी कहने की एक पारंपरिक शैली है, बल्कि समाज की सांस्कृतिक, धार्मिक और नैतिक मूल्यों को चित्रों, नृत्यों, लोककला के माध्यम से दर्शाने का प्रभावशाली माध्यम भी है। फिलहाल हम चर्चा कर रहे हैं कथाचित्रण की।

कथा चित्रण में चित्रों के माध्यम से किसी कथा, किसी बात को, किसी संदेश को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें पौराणिक, ऐतिहासिक, लोककथाएँ, सामाजिक संदेश सहित सभी पक्ष शामिल हो सकते हैं। कथा चित्रण आदि से अन्त तक रही है और रहेगी। गुफाओं, मंदिरों, ताड़पत्रों, पाण्डुलिपियों, पारंपरिक कपड़ों या अन्य किसी भी धरातल पर भी इसकी उपस्थिति को महसूस किया जा सकता है। कथा चित्रण और संस्कृति पर चर्चा के पूर्व संस्कृति पर दृष्टिपात बहुत जरूरी है।

संस्कृति समाज का एक अभिन्न अंग है जिससे समाज और भी निखर कर परिष्कृत होता है। संस्कृति ही है जो समाज को पीढ़ी दर पीढ़ी निखरने के मार्ग प्रशस्त करती है तथा अच्छे व बुरे को विलग करने की विलक्षण शक्ति प्रदान करती है।

कला और संस्कृति यदि अपभ्रंशित हो गयी तो समाज खोखला हो जाता है, रीढ़ विहीन हो जाता है, अतः हमें हमेशा अपनी संस्कृति को बचाकर, संवार कर तथा परिष्कृत रूप में सुधार कर हमेशा आने वाली पीढ़ी को सौंपना चाहिए ताकि ऐसे ही कुछ सुधार कर वो अपने आगे की पीढ़ी को दे सकें। संस्कृति को बचाने का कार्य करती है कला या दूसरे शब्दों में कहें तो कथा चित्रण भी। संस्कृति सामाजिक विकाश को प्रेरणा प्रदान करती है।

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है, धार्मिक और आध्यात्मिक समृद्धि भी भारतीय संस्कृति को मजबूती प्रदान करती है। भारतीय संस्कृति वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, योग, ध्यान और अनेक धार्मिक परंपराओं की जननी है। यह आत्मा और ब्रह्मांड के रहस्यों की खोज को महत्व देती है। विभिन्न मत, भाषा, भोजन, पहनावा आदि को एक साथ समन्वय के साथ रहने को बल देती है। भारतीय संस्कृति का ही फल है परिवारों का भाईचारा, बड़ों का सम्मान, मेहमानों का सम्मान। हालांकि अभी स्थिति पहले जैसी नहीं रही फिर भी हम भविष्य में अच्छे की उम्मीद तो कर ही सकते हैं।

संस्कृति के चर्चा पर के. एम. मुंशी के बोल- हमारे रहन-सहन के पीछे जो मानसिक अवस्था, मानसिक प्रवृत्ति है, जिसका उद्देश्य हमारे जीवन को परिष्कृत, शुद्ध और पवित्र बनाना है तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना है, वही संस्कृति है। रही बात भारतीय कला में संस्कृति की तो झुठलाया नही जा सकता कि प्रागऐतिहासिक से लेकर आज तक हमारे यहां के हर कला में संस्कृति की झलक बेशुमार प्रवाहित है। कथा चित्रण और संस्कृति के विषय में यह विदित है कि रामायण, महाभारत, गीतगोविंद, बालगोपाल तमाम पर आधारित चित्र पाये गये। अजन्ता, बाघ, जोगीमारा आदि में अधिकतर चित्र किसी न किसी घटना पर ही आधारित है जहां पर चित्रों के साथ ही घटना का भी जिक्र किया गया है। रामायण के प्रसंग जैसे- रामजन्म, सीता स्वयंवर, वनवास, पंचवटी प्रसंग, संजीवनी प्रसंग, रावण वध, मधुबनी, पटचित्र, फड़ चित्रकला सहित सभी विधाओं में दर्शित है, मंदिरों के दीवारों पर भी रामायण के कथाचित्रण प्राप्त हैं। कथा चित्रण केवल एक पारंपरिक विधा नहीं, बल्कि एक जीवंत कला रूप है। रंगों की जीवंतता, चित्रों की अभिव्यक्ति और भावनाओं की प्रस्तुति इसे एक अद्भुत कला शैली बनाती है। आधुनिक समय में भी यह शैली एनिमेशन, ग्राफिक्स, और चित्र पुस्तकों के माध्यम से पुनः जीवंत हो रही है। लोगों के बीच अपनी जगह बना रही है। इलेस्ट्रेशन भाषाओं के डोर में नही बंधा है बल्कि किसी भी देश, दुनिया, धर्म के लोग इसे आसानी से समझ सकते हैं और समझ कर अपने कर्तव्य को समाज के अनुकूल परिवर्तित कर सकते हैं।

जोगीमारा गुफा जिसे पहले एक देवदासी का निवास समझा गया था, हालांकि था नही, से प्राप्त शिलालेखानुसार- यह वरुण देवता का मन्दिर था और जैन धर्म का इसकी कला पर प्रभाव था, वरुण देवता के सेवा में ''सुतनुका'' नामक देवदासी रहती थी। इनसे सम्बन्धित कहानियों का चित्रण जोगीमारा में मिलता है। जोगीमारा में ही संभवतः पौराणिक गजग्रह कथा का चित्रण भी प्राप्त हुआ है। अजंता से स्तूप पूजा का जो चित्र प्राप्त हुआ है जिसमे लगभग सोलह व्यक्तियों का समूह दर्शाया गया है वह भी कथा पर ही आधारित है जहां किसी राजा अथवा श्रेष्ठी द्वारा चैत्य को बनवा कर संघ को भेंट देने के समारोह की घटना वर्णित है। गुफा संख्या दस के साम जातक का चित्र भी साम नामक व्यक्ति के अपने अंधे माता-पिता की सेवा पर आधारित है जो श्रवण कुमार के कहानी से पूर्णतः मेल खाती हुई सी है। 'मरणासन्न राजकुमारी' भी कथा पर ही आधारित है जिसको तपस्वी कलाकारों ने सजीवता के शिखर पर ला खड़ा किया था जिसके बारे में ग्रिफिक्स महोदय का मत- फ्लोरेंस का चित्रकार इससे अच्छा रेखांकन कर सकता था और वेनिस का कलाकार अच्छे रंग भर सकता था, किन्तु दोनो में से कोई इससे अधिक सुंदर भाव का प्रदर्शन नही कर सकता था। उन्ही के दूसरे शब्दों में- भावना, करुणा तथा कथा चातुर्य की दृष्टि से इससे बढ़कर कला इतिहास में कोई प्रमाण नही है। अजंता के कृतियों के बारे में सभी कला मर्मज्ञों का मत लगभग एक सा ही है। समृद्धता के मामले में भी अजंता का अपना स्थान रहा है। अजन्ता के लगभग सभी चित्र किसी न किसी घटना या कहानी पर ही आधारित है, मतलब कथा चित्रण का ही एक रूप है अजन्ता। पाल शैली में भी साधनमाला, गन्धव्यूह, करनदेवगुहा, पंचशिखा जैसी पोथियां प्राप्त हुई हैं जो कथा चित्रण युक्त हैं। गुजरात में बसंत बिलास नामक दृष्टांक चित्रण प्राप्त होता है जो कालीदास की रचना ऋतुसंहार पर आधारित है जिसमे विशेषतः फाल्गुन मास का मोहक चित्रांकन हुआ है, कविराज विल्हण और उनकी प्रेयसी चम्पावती की प्रणयलीला का चित्रांकन विल्हण कृत चौर पंचाशिका में अंकित है। मार्कण्डेय पुराण, दुर्गाशप्तसती, रतिरहस्य, कामसूत्र सम्बन्धी चित्र जैन कलाकारों द्वारा निर्मित किये गये। अगर देखा जाय तो रतिरहस्य, दुर्गाशप्तसती, बालगोपालस्तुति आदि से सम्बन्धित शैली के चित्रों का निर्माण सातवीं शताब्दी से ही गुजरात, मारवाण में होने लगा था। मुगल कालीन चित्रावलियों में हम्जानामा भी विशेष है जिसके चित्र सूती कपड़े पर बनाये गये थे। अकबरनामा भी कम महत्वपूर्ण नही है, अनवार-ए-सुहैली, रम्जानामा, आदि भी कथा चित्रण के इतिहास को बखूबी बयां करते से प्रतीत होते हैं।

कथा चित्रण भारतीय संस्कृति की आत्मा है। यह न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि समाज को शिक्षित और प्रेरित करने का भी माध्यम है। आज के तकनीकी युग में इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है, आवश्यकता है तो बस इसके संरक्षण और संवर्धन की। संस्कृतियों के साथ बढ़ते कथाचित्रण का भविष्य वाकई उज्ज्वल है। बच्चों पर इसका प्रभाव बहुत अधिक होता है। संलग्न कलाकृति पंकज तिवारी की है।

सहकारिता मंत्री अमित शाह का नेतृत्व

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

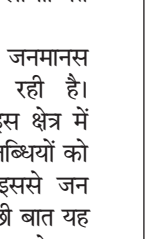

सहकारिता विश्वविद्यालय से बदलेगा देश

भारत में सहकारिता का यह स्वर्णिम काल है। इस समय देश के गृह मंत्री अमित शाह ने स्वयं सहकारिता आन्दोलन की बयार को तेज कर दिया है। देश में आज़ादी के बाद सहकारिता को लेकर किया जा रहा कार्य स्वर्णाक्षरों में अंकित हो रहा है, ऐसा कहा जाए तो कोई अतिश्योक्तिपूर्ण बात न होगी। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने लोकसभा में त्रिभुवन सहकारी यूनिवर्सिटी विधेयक, 2025 भी पेश कर दिया और सदन ने इस विधेयक को ध्वनिमत से पारित भी कर दिया है। देश में निश्चय ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुदृढ़ करने की दिशा में गहरी सोच का अभाव था, स्वरोजगार और छोटी उद्यमिता के विकास में अरुचि थी। इससे न तो सामाजिक समावेशिता के लक्ष्य पूर्ण हो पा रहे थे और न ही नवाचार में हमारे युवाओं व वैज्ञानिकों के बीच सोच विकसित हो पा रही थी। भारत में नरेंद्र मोदी सरकार के बाद सहकारिता मंत्रालय की स्थापना एक दूरदर्शी लक्ष्य रहा है। इस मंत्रालय की बागडोर सहकारिता में अभिरुचि रखने वाले नेता अमित शाह ने जब सम्हाली तो उन्होंने कम समय में बहुत कुछ कर दिखाया जिससे आज भारत का आम आदमी लाभान्वित हो रहा है।

वस्तुतः, भारत में सहकारिता में जनमानस की अपनी सहभागिता दिखती रही है। सहकारिता मंत्रालय बन जाने से इस क्षेत्र में फोकस होकर कार्य करने और उपलब्धियों को हासिल करने में बल मिला है। इससे जन सरोकार को बल मिला है और अच्छी बात यह है कि भारत के लोग अपने उद्यम, अपने श्रम और अपनी गरिमा को संयोजित व सुरक्षित करने लगे हैं। लोकसभा में त्रिभुवन सहकारी यूनिवर्सिटी विधेयक, 2025 भी पेश कर रहे थे सहकारिता मंत्री अमित शाह तो उस समय उन्होंने कहा भी कि सहकारिता एक ऐसा विषय है जो देश में हर परिवार को छूता है। हर गाँव में कोई न कोई ऐसी इकाई है जो सहकारिता के माध्यम से कृषि विकास, ग्रामीण विकास और स्वरोजगार के काम में जुटी हुई है और देश के विकास में योगदान करती है। आजादी के 75 वर्षों बाद आज देश को पहला सहकारिता विश्वविद्यालय मिल रहा है। इस विधेयक के पारित होने के बाद ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी, स्वरोजगार और छोटी उद्यमिता का विकास होगा, सामाजिक समावेशिता बढ़ेगी और नवाचार तथा अनुसंधान में कई नए मानांक स्थापित करने के अवसर भी मिलेंगे। सबसे अहम् बात जो अमित शाह ने कहा वह यह था कि इस प्रकार पूरे देश को सहकारिता की भावना से युक्त और आधुनिक शिक्षा से लैस एक नया सहकारिता नेतृत्व मिलेगा।

भारतीय समाज में सहकारिता की यह अलख जगाने की इच्छाशक्ति निःसंदेह प्रशंसनीय है और अनुकरणीय भी है। भारतीय जनमानस को स्वावलंबन देने व अपने संकल्प से देश को विकास पथ पर आगे ले जाने की दिशा में यह अमित शाह का कार्य है। उनकी इस विश्वविद्यालय को स्थापित करने के पीछे मंशा बहुत पवित्र है, सबसे महत्वपूर्ण यह है। वह इस कोऑपरेटिव क्षेत्र के विकास और विस्तारित करने की कोशिश में हैं। वह चाहते हैं कि प्रशिक्षित मानव संसाधन की जरूरत हमें पड़ेगी, उसकी भरपाई त्रिभुवन सहकारी यूनिवर्सिटी से वह पूरा कर सकें। अमित शाह ने उम्मीद ही नहीं विश्वास व्यक्त किया है कि सहकारी यूनिवर्सिटी बनने के बाद इसके डिप्लोमा और डिग्री धारकों को नौकरी मिलेगी। इस यूनिवर्सिटी से हम डोमेस्टिक के साथ ग्लोबल वैल्यू चैन में भी बड़ा योगदान करेंगे। न्यू एज कोऑपरेटिव कल्चर भी इस यूनिवर्सिटी से शुरु होगा। उनकी चिंता है कि देशभर में हजारों की संख्या में सहकारी शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान फैले हुए हैं, मगर इनके कोर्स में कोई मानकीकरण नहीं है, वह चाहते हैं कि इसे हम व्यवस्थित कर सकें। उन्होंने इसीलिए लोक सभा में विधेयक पेश करते हुए अपने ज़वाब में कहा कि हमने यूनिवर्सिटी बनाने से पहले ही कोऑपरेटिव क्षेत्र की जरूरत को ध्यान में रख कर कोर्स डिजाइन का काम शुरू कर दिया है। यूनिवर्सिटी में डिग्री, डिप्लोमा कोर्स भी होंगे और पीएचडी की डिग्री भी दी जाएगी। साथ ही सहकारिता के क्षेत्र में काम कर सभी मौजूदा कर्मचारियों के लिए अल्पावधि का सर्टिफ़िकेट कोर्स भी होगा।

देश में निश्चय ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुदृढ़ करने के दिशा में गहरी सोच का आभाव था, स्वरोजगार और छोटी उद्यमिता के विकास में अरुचि थी। इससे न तो सामाजिक समावेशिता के लक्ष्य पूर्ण हो पा रहे थे और न ही नवाचार में हमारे युवाओं व वैज्ञानिकों के बीच सोच विकसित हो पा रही थी। भारत में नरेंद्र मोदी सरकार के बाद सहकारिता मंत्रालय की स्थापना एक दूरदर्शी लक्ष्य रहा है। इस मंत्रालय की बागडोर सहकारिता में अभिरुचि रखने वाले नेता अमित शाह ने जब सम्हाली तो उन्होंने कम समय में बहुत कुछ कर दिखाया जिससे आज भारत का आम आदमी लाभान्वित हो रहा है।

सहकारिता विश्वविद्यालय आजादी के 75 साल बाद बनेगा और सोचिए कि जब उससे हमारे देश की युवा आबादी प्रशिक्षित होगी तो सहकारिता को बढ़ावा देने वाले लोग, सहकारिता की सोच को आगे बढ़ाने वाले बौद्धिक वर्ग को हम तैयार करेंगे। गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह चाहते हैं कि प्रतिवर्ष लाखों युवा लोग डिप्लोमा, डिग्री या सर्टिफिकेट लेकर सहकारी आंदोलन में सम्मिलित हों। अमित शाह ने कहा भी कि वे 18 वर्ष की आयु से कोऑपरेटिव से जुड़े रहे हैं और इसकी खूबियों और कमियों का अनुभव किया है। मोदी जी एक समृद्ध भारत की नींव डाल रहे हैं और यह विधेयक इसमें मजबूत स्ट्रक्चर प्रदान करेगा। त्रिभुवन दास पटेल जी की सोच थी कि सहकारी क्षेत्र में मुनाफा हर गरीब महिला तक पहुंचे, इसलिए यह यूनिवर्सिटी उनके नाम पर रखने का प्रस्ताव किया गया है। इस विश्वविद्यालय के बनने से निश्चय ही अमित शाह की अपनी सहकारिता सोच व स्वप्न को साकार होते हुए भारत के लोग देखेंगे और उससे लाभान्वित होंगे।

दुनिया में बहु-क्षेत्रीय स्वनिर्भर सहकारिता संगठन आगे आकर कार्य कर रहे हैं। सहकारिता क्षेत्र को बढ़ावा देने वाली शिक्षण व कौशल निर्माण कार्यशालाओं का आयोजन विश्व भर में किया जा रहा है। इसमें प्रतिभागियों को शामिल किया जा रहा है, व्यापार में नवीनतम तकनीकों के बारे में उन्हें प्रशिक्षित किया जा रहा है। ऐसे में, भारत में सहकारिता को बढ़ावा देने वाले त्रिभुवन पटेल के नाम पर विश्वविद्यालय के जरिये भारतीय युवा संसाधन तैयार करने का संकल्प और उसके लिए सद्प्रयास निश्चय ही भारत को बेहतरीन भविष्य प्रदान करने की कोशिश है। जैसा कि केन्द्रीय सहकारिता मंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि इस विधेयक के माध्यम से सहकारी सिद्धांतों और सहकारी गतिविधियों का विस्तार होगा, कोऑपरेटिव क्षेत्र को नई प्रोघोगिकी का फायदा होगा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी। साथ ही अनुसंधान और नवाचार भी बढ़ेंगे और जमीनी स्तर पर कोऑपरेटिव क्षेत्र मजबूत भी होगा। त्रिभुवन दास जैसे महान व्यक्ति के नाम से जुड़े होने के कारण यह सहकारी यूनिवर्सिटी उच्च कोटि की यूनिवर्सिटी सिद्ध होगी। यह देश में बहुत अच्छे सहकारिता कर्मी देने का काम करेगी। यह उनकी स्वाभाविक इच्छशक्ति और अपनी आत्मशक्ति का प्रतिफल है। निःसंदेह अब त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय से सहकारी क्षेत्र को संगठनों की कार्यक्षमता में सुधार, प्रशिक्षित मानव संसाधनों से पारदर्शिता को बढ़ावा मिलेगा। डिजिटल नवाचार के तहत सहकारी प्लेटफार्मों पर अनुसंधान, अंतरराष्ट्रीय मानकों पर सहकारी संस्थानों का निर्माण, और नई फंडिंग योजनाओं के विकास के लिए वित्तीय रणनीतियों का सृजन होगा तो इससे देश ही विकास करेगा।

देश में ऐसे सद्प्रयास की सच में बहुत ज़रूरत थी। अमित शाह ने अपने कम समय में जो प्रतिष्ठित अवदान विश्वविद्यालय के रूप में दिया है, उसका अभिनन्दन किया जाना चाहिए। यह सहकारिता के लिए नए नैरेटिव की स्थापना है। यह उनकी राष्ट्रभक्ति है। यह उनकी जनभक्ति है। यह उनका भारत निर्माण की दिशा में किया जा रहा सद्प्रयास है। त्रिभुवन सहकारी यूनिवर्सिटी विधेयक, 2025 भले ही अभी शुरू रहा हो, लेकिन आने वाले 2047 तक यह विश्वविद्यालय लाखों युवा सहकारी पैरोकारों को तैयार कर चुका होगा, उस समय अमित शाह के आज के प्रयास को लोग नमन करेंगे। भारत में नैसर्गिक रूप से सभी को बहुत कुछ मिला है लेकिन ऐसे नए उपक्रम निःसंदेह व्यक्ति को सबसे भिन्न बनाते हैं। अमित शाह का यह अवदान सहकारिता के क्षेत्र में उनकी विशिष्टता का सर्वोत्तम उदहारण है।

'सहकार से समृद्धि': पीएम मोदी की उल्लेखनीय पहल

भारत में सहकारी आंदोलन

मीनेश शाह

लेखक राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के प्रबंध निदेशक हैं।

भारत सरकार का विश्वास है कि ग्रामीण विकास और राष्ट्र निर्माण में सहकारिताओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस दृष्टिकोण के अंतर्गत 'सहकार से समृद्धि' की उल्लेखनीय पहल की है। 2021 में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के कुशल नेतृत्व में स्थापना के बाद से ही सहकारिता मंत्रालय सहकारी क्षेत्र में सरकारी पहलों को आगे बढ़ा रहा है और उसे कार्पोरेट क्षेत्र के समान अवसर मिल रहे हैं। अनेक अन्य पहलों में त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय-टीएसयू की स्थापना देश में सहकारी आंदोलन को मजबूत करने की दिशा में अभूतपूर्व कदम है। अनादि काल से डेरी उद्योग परंपरागत पारिवारिक गतिविधि रही है, लेकिन ब्रिटिश शासन में दशकों तक लापरवाही के कारण भारत दूध की कमी वाला और आयात-निर्भर देश बन गया।

स्वतंत्रता के बाद बढ़ती जनसंख्या के कारण दूध की उपलब्धता घटने लगी और देश की आयातों पर निर्भरता और बढ़ गई। 1950 और 1960 के दशक में दूध उत्पादन लगभग 20 मिलियन टन के निकट बना रहा। इस कारण इस कालखंड में प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता प्रति दिन 130 ग्राम से घट कर 112 ग्राम रह गई। ऐसी स्थिति में गुजरात के सुदूर शहर आनन्द से उम्मीद की किरण जगी और यह शहर भारत की सहकारी सफलता गाथा का पर्याय तथा भारत की दूध-राजधानी बन गया। इसी स्थान पर 1946 में स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरणा से सफल सहकारी आंदोलन पैदा हुआ जिसकी परिणति 1946 में अमूल की स्थापना के रूप में सामने आई।

खेड़ा क्षेत्र के किसानों का बिचौलिये व पोल्सन डेरी शोषण करते थे और मनमाने ढंग से मूल्य तय करने के साथ ही अपनी सनक के आधार पर दूध लेना बंद कर देते थे। इस पर डेयरी किसानों ने 'दूध हड़ताल' कर पोल्सन को दूध की सप्लाई बंद कर दी। उन्होंने सहायता के लिए सरदार वल्लभभाई पटेल से गुहार लगाई जिन्होंने उनको युवा स्वतंत्रता सेनानी श्री त्रिभुवनदास किशीभाई पटेल के निर्देशन में अपनी सहकारी डेरी स्थापित करने की सलाह दी। श्री त्रिभुवनदास पटेल ने आनन्द में ग्रामीण डेरी सहकारितायें बनाने की शुरुआत की और इस प्रकार अमूल का जन्म हुआ। इसमें केवल दो ग्राम डेरी सहकारी सोसाइटी शामिल थीं और लगभग 250 लीटर दूध एकत्र किया जाता था। यह आंदोलन तेजी से फैला तथा और ज्यादा डेरी किसान इसमें शामिल होने लगे। श्री त्रिभुवनदास पटेल डा. वर्गीज़ कुरियन को भी यहां लाए और उनको अमूल के साथ बने रहने को प्रेरित किया। इसके बाद से अमूल ने फिर पीछे मुड़ कर नहीं देखा और वह आज हर परिवार का अंग बनने के साथ दुनिया का एक सबसे मजबूत 'फूड ब्रांड' बन गया। स्वतंत्रता के पश्चात जहां गुजरात में डेरी उद्योग फल-फूल रहा था, वहीं उसे देश के अन्य भागों में संघर्ष करना पड़ा।

जब तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री यहां आणंद में एक पशु आहार प्लांट का उद्घाटन करने 1964 में आए तो उन्होंने गुजरात में डेरी सहकारिताओं की सफलता पर अध्ययन का प्रस्ताव किया और वे एक रात अजरपुरा गांव में ठहरे। गुजरात में डेरी सहकारिताओं की सफलता से प्रभावित शास्त्री जी ने नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड (एनडीडीबी) की स्थापना 1965 में की ताकि अमूल की सफलता पूरे भारत में दुहराई जा सके। 1970 में एनडीडीबी ने आपरेशन फ्लड-ओएफ की शुरुआत की जो दुनिया का सबसे बड़ा डेरी विकास कार्यक्रम था। इसने सहकारिता के आनन्द माडल का अनुसरण किया। ओएफ या 'श्वेत क्रांति' ने गति पकड़ी और उसने शानदार नतीजे दिखाए। ओएफ के बाद एनडीडीबी ने बड़े पैमाने पर डेरी क्षेत्र का विकास किया जिनमें पर्सपेक्टिव प्लान तथा नेशनल डेरी प्लान 1 शामिल थे। इन बड़े डेरी विकास कार्यक्रमों ने अंततः भारत को एक दूध की कमी वाले देश के बजाय दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक बना दिया।

आज भारत अकेले वैश्विक दुग्ध उत्पादन में एक चौथाई का योगदान करता है। इसने डेरी किसानों को उपभोक्ताओं के पैसे का अधिकतम हिस्सा दिलाने में योगदान किया। सहकारितायें आज लाभकारी, उचित तथा पारदर्शी मूल्य निर्धारण के माध्यम से डेरी किसानों को राजस्व का 75-80 प्रतिशत हस्तांतरित करती हैं। डेरी सहकारितायें न केवल सस्ती कीमतों पर उपभोक्ताओं को सुरक्षित और पोषक दूध व दुग्ध उत्पाद उपलब्ध कराती हैं, बल्कि देश भर में डेरी किसानों को आजीविका भी देती हैं।

देश में ओएफ क्रियान्वयन के दौरान एनडीडीबी ने अनुभव किया कि करोड़ों लोगों से संबंध रखने वाले इतने बड़े आकार की परियोजनाओं को जटिल ग्रामीण परिवेशों में कौशल प्रबंधन के लिए ग्रामीण पेशेवरों की जरूरतें होती हैं। इसके परिणामस्वरूप एक संस्थान-इंस्टीट्यूट आफ रूरल मैनेजमेंट आनन्द-इरमा की स्थापना हुई। इसकी स्थापना टिकाऊ परिस्थितिकी, हितैषी और ग्रामीण जनता में समतापूर्ण सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए पेशेवर प्रबंधन विकसित करने के लिए की गई। इरमा की स्थापना 1979 में एनडीडीबी, स्विस एजेंसी फार डेवलपमेंट कोआपरेशन-एसडीसी, भारत सरकार, पूर्व इंडियन डेरी कार्पोरेशन तथा गुजरात सरकार की वित्तीय व तकनीकी सहायता से की गई।

गुजरात सरकार ने इसके लिए जमीन दी। इरमा अब एक प्रमुख संस्थान बन गई है जो सहकारिता और ग्रामीण प्रबंधन के लिए प्रतिबद्ध है। यह बहुत गर्व का विषय है कि इरमा ने अब आनन्द, गुजरात के अपने परिसर में त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय-टीएसयू स्थापित कर ऐतिहासिक काम किया है। उचित है कि इस स्थान का चयन भारत के पहले सहकारिता विश्वविद्यालय के लिए किया गया है। इरमा ने टीएसयू की स्थापना के साथ अपनी विरासत का विस्तार किया है। इस विश्वविद्यालय का नाम त्रिभुवनदास पटेल जी के नाम पर रखना उचित है जिन्होंने डेरी क्षेत्र में सहकारी आंदोलन की नींव डाली थी।

इसके बाद से डेरी सहकारिताओं ने देश में किसी कृषि उत्पाद के लिए सर्वाधिक सफल सहकारी माडल का उदाहरण पेश किया है। प्रतिबद्ध सहकारिता विश्वविद्यालय का शानदार विचार सबसे पहले अमित शाह जी को आया था जो सहकारिता के पहले मंत्री हैं।

इस प्रकार भारत के सहकारी आंदोलन में त्रिभुवनदास पटेल के योगदान को स्वीकार करते हुए एक विश्वस्तरीय संस्थान की स्थापना की गई है जो सहकारी क्षेत्र में शोध, नीति निर्माण तथा नेतृत्व विकास में अपना योगदान करेगा। अपने किस्म का यह पहला विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के लिए प्रतिबद्ध भारत का पहला सहकारी संस्थान है।

टीएसयू ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने, स्वरोजगार और लघु उद्यमिता की परिस्थितिकी विकसित करने, सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देने तथा खोज एवं शोध में नए मानक स्थापित कर अवसर बढ़ाने का काम करेगा। यह तकनीकी शिक्षा और सहकारी क्षेत्र में प्रबंधन प्रशिक्षण का काम करेगा, सहकारिता शोध एवं विकास को बढ़ावा देगा तथा संस्थानों के नेटवर्क के साथ देश में सहकारी आंदोलन को मजबूत करेगा। टीएसयू का पंजीकरण सोसाइटीज़ रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1860 के अंतर्गत कॉर्पोरेट बाडी के रूप में किया जाएगा और इसे राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया जाएगा।

इसमें हर साल लगभग 8 लाख छात्रों को शिक्षा देने की क्षमता होगी। भारत सरकार ने अगले पांच साल में देश में 2 लाख बहुद्देशीय पैक्स, डेरी, फिशरी सहकारितायें बनाने का लक्ष्य रखा है जो नाबार्ड, एनडीडीबी व नेशनल फिशरी डेवलपमेंट बोर्ड-एनएफडीबी की सहायता से सभी ग्राम पंचायतों तक सहकारिताओं के माध्यम से पहुंचेंगी। इस व्यापक प्रयास के लिए अन्य संसाधनों के साथ ही बड़ी संख्या में प्रशिक्षित श्रम शक्ति की आवश्यकता होगी। ऐसे में टीएसयू की स्थापना इन प्रयासों में सहयोग करेगी। यह प्रयास सचमुच भारत को 'सहकार से समृद्धि' का दृष्टिकोण जमीन पर उतारने में सहयोग करेगा। इससे भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने में भी उल्लेखनीय सहायता मिलेगी।

भगवान पद्मप्रभ का ज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाया

धार। पूर्णिमा महोत्सव के तहत ग्राम आहू में संकट मोचन पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में विशेष पूजा अर्चना की गई। साथ ही भगवान पद्मप्रभ भगवान का ज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाया गया। आयोजन में दूर-दूर से भक्त जन शामिल हुए। प्रारंभ में सभी अतिथियों का स्वागत प्रबंध कमेटी के अध्यक्ष वीरेंद्र

जैन ने किया। कार्यक्रम संबंधी जानकारी प्रबंध कमेटी के कार्याध्यक्ष नवीन गोधा ने मंदिर जी और पुर्नरोद्धार, इतिहास तथा पूर्णिमा महोत्सव की जानकारी दी। मीडिया प्रभारी सुभाष जैन ने बताया कि यहां हर पूर्णिमा पर विशेष पूजा अर्चना होती है। इस दिन हमेशा दूर-दूर से श्रद्धालु अपनी मनोकामना लेकर आते है। आज के विधान के मुख्य पात्र महाराष्ट्र के अहमद नगर के संभाजी बाबूजी जैन थे। शांतिधारा प्रेरित पारस गंगवाल ने व मंडल विधान पर मंगल कलश सुभाष गौतम गंगवाल एवं दीप प्रज्वलन कर मंडल विधान पर विराजमान करने का सौभाग्य मधु श्रेणिक गंगवाल परिवार को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर जैन धर्म के छट्टे तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभ भगवान का ज्ञान कल्याणक भी मनाया गया। आभार सुभाष गंगवाल व चन्द्रप्रकाश गंगवाल ने माना।

शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। सारणी पुलिस ने शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म करने के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पीड़िता ने 10 अप्रैल को थाना सारणी में शिकायत दर्ज कराई थी। पीड़िता के अनुसार, कि आरोपी पवन धुर्वे ने शादी का झांसा देकर उसके

साथ कई बार दुष्कर्म किया। इस मामले में थाना सारणी में धारा 69 बीएनएस के तहत अपराध पंजीबद्ध किया। पुलिस अधीक्षक निश्चल एन. झारिया के निर्देश पर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई की। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमला जोशी और एसडीओपी सारणी रोशन कुमार जैन के मार्गदर्शन में टीम का गठन किया गया। पुलिस ने संत रविदास कॉलोनी पाथाखेड़ा सारणी निवासी 24 वर्षीय पवन धुर्वे को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया। इस मामले में थाना प्रभारी जयपाल इनवाती, उपनिरीक्षक सुनिल गौर, प्रधान आरक्षक विवेक यादव और आरक्षक महेश भलावी व जितेंद्र मोरे की टीम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सामुदायिक युवा नेतृत्वकर्ता ने चलाया हस्ताक्षर अभियान

बैतूल। जनजाति कार्य विभाग मध्य प्रदेश शासन एवं मैजिक बस इंडिया फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को सक्षम जीवन कौशल कार्यक्रम के अंतर्गत ग्राम पंचायत पहाड़पुर के शासकीय माध्यमिक शाला में स्कूल चले हम अभियान के तहत हस्ताक्षर अभियान आयोजित किया गया। इस अभियान का नेतृत्व सामुदायिक युवा नेतृत्वकर्ता सीवायएल तारा

कुशवाहा कंचन द्वारा किया गया। कार्यक्रम में शिक्षकों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, समुदाय के सदस्य, एसएमसी सदस्य, अध्यक्ष, सीएससी प्रतिनिधि एवं सक्षम कार्यक्रम से ब्लॉक मैनेजर मीना सातनकर सहित कई लोग उपस्थित रहे। इस दौरान शिक्षा के महत्व पर जोर देते हुए बताया गया कि बच्चों का शिक्षित होना गांव के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। उपस्थित समुदाय के सदस्यों को यह समझाया गया कि बच्चों को नियमित स्कूल भेजना, उनके उज्जवल भविष्य और समाज की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ब्लॉक मैनेजर मीना सातनकर ने सभी से आग्रह किया कि वे अपने गांव के हर बच्चे को नियमित रूप से स्कूल भेजने के लिए प्रेरित करें और जिन बच्चों ने अभी तक स्कूल में प्रवेश नहीं लिया है, उनका नामांकन अवश्य करवाएं। अंत में सभी उपस्थित लोगों से हस्ताक्षर कर यह शपथ दिलवाई गई कि वे अपने बच्चों को स्कूल भेजेंगे और समुदाय के अन्य सदस्यों को भी इसके लिए जागरूक करेंगे।

धूमधाम से मनाया गया हनुमान दद्दा का जन्मोत्सव, निकली शोभायात्रा

मंदिरों में सुबह से लगी रही भक्तों की भीड़, सुंदरकांड-रामायण पाठ का हुआ आयोजन

बैतूल। जय-जय श्रीराम और जय-जय हनुमान के जयकारों से शहर के हनुमान मंदिर गुंजायमान हो उठे। हनुमान जयंती पर शहर के मंदिरों में सुबह से ही पूजा-अर्चना का दौर जारी रहा। देर शाम शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा का जगह-जगह फूलों से स्वागत किया गया। हनुमान जयंती को लेकर श्रद्धालुओं ने पहले से तैयारियां कर रखी थी। मंदिरों को आकर्षक रूप में सजाया था। वहीं हनुमान जयंती के एक दिन पूर्व सुंदरकांड और रामायण पाठ का आयोजन किया गया। भक्तों के द्वारा हनुमान दद्दा को चोला भी चढ़ाया गया। टिकारी स्थित हनुमान दद्दा के मंदिर में विशेष आयोजन किया गया। जिसमें सुबह भक्तों के द्वारा हवन पूजन के साथ आरती की गई और यहां पर प्रसादी वितरण भी की गई। जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने पहुंचकर प्रसादी ग्रहण की। गौरतलब है कि टिकारी के हनुमान दद्दा अर्जी वाले हनुमान दद्दा के रूप में जाने जाते हैं और यहां पर स्थानीय भक्तों के अलावा बाहर के भी भक्त आते हैं। सरकारी कार्यालयों में स्थित मंदिरों में भी दिन भर धार्मिक आयोजन होते रहे। इसके अलावा जिले भर के मंदिरों को आकर्षक साज सज्जा कर सजाया गया था वहीं कहीं श्रीरामचरित मानस, तो कहीं सुन्दरकाण्ड पाठ का आयोजन भी किया गया। वहीं श्री हनुमान जन्मोत्सव समिति गंज बैतूल द्वारा शाम को श्री हनुमान चौक (तांगा स्टैंड) गंज बैतूल से शोभायात्रा का आयोजन किया गया। यहां श्री हनुमान की भव्य महाआरती भी आयोजित की गई।

भक्ति से सराबोर नजर आए भक्त- हनुमान जन्मोत्सव के पावन अवसर पर पूरे जिले में धार्मिक उत्साह और आस्था का अद्भुत नजारा देखने को मिला। भक्ति भाव से सराबोर श्रद्धालुओं ने सुबह से ही मंदिरों में जाकर पूजा-अर्चना की। हनुमान जी के दर्शन के लिए मंदिरों में भक्तों की लंबी कतारें लगी रहीं। मंदिरों को आकर्षक ढंग से फूलों और रंग-बिरंगी लाइटों से सजाया गया था। कई जगहों पर विशेष हवन और पूजन का आयोजन हुआ, जिसमें भक्तों ने बढ़-चढकर भाग लिया। मोती वार्ड स्थित श्री हनुमान मंदिर में सुबह से पूजा अर्चना के साथ भक्तों को प्रसादी वितरित की गई। टैगोर वार्ड पुलिस लाइन स्थित श्री हनुमान माता मंदिर में भी अखण्ड रामायण पाठ का आयोजन किया गया था, जिसका समापन शनिवार सुबह किया गया। दोपहर में हवन पूजन के पश्चात भंडारा प्रसादी वितरित की गई।

हवन पूजन कर बांटी प्रसादी

भगवान श्रीराम के परम भक्त हनुमान जी की विशेष आरती के बाद प्रसादी वितरण का भी आयोजन किया गया। कुछ मंदिरों में विशाल भंडारा हुआ, जहाँ हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, सभी ने पूरे उत्साह के साथ हनुमान जन्मोत्सव मनाया। जय बजरंग बली के जयघोषों से वातावरण गूंज उठा। यह पर्व ना केवल आस्था का प्रतीक रहा, बल्कि सामाजिक एकता और सौहार्द का संदेश भी देता नजर आया। कोसमी स्थित टर्बो टायर एण्ड ट्यूब इंडस्ट्रीज में स्थित हनुमान मंदिर में भी सुबह से ही पूजा अर्चना और हवन पूजन किया गया। पूरे विधि विधान के साथ पूजा अर्चना की गई और शाम को भंडारा प्रसादी का कार्य किया जाएगा। इसके अलावा हनुमान डोल, केरपानी, पोस्ट आफिस, जिला पंचायत, जिला उद्योग कार्यालय, न्यायालय परिसर, अस्पताल परिसर, सिंधी कालोनी सहित अन्य हनुमान मंदिरों में जन्मोत्सव पर धूम मची रही।

केसरीनंदन हनुमान मंदिर में हुआ भंडारा

हनुमान जयंती पर केसरीनंदन हनुमान मंदिर बड़ा नीम इटारसी रोड पर भंडारा दोपहर 3 बजे से और महाआरती का आयोजन शाम 7 बजे से हुआ। इस कार्यक्रम में बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, आमला विधायक डॉ योगेश पंडाग्रे, नगर पालिका अध्यक्ष पार्वतीबाई बारस्कर, पूर्व नपाध्यक्ष आनंद प्रजापति, पूर्व पार्षद गीतेश बारस्कर, प्रकाश धोटे, राजा वाग्रद्रे, संजु साहू, बवन पवार, कृष्णा वागद्रे, सुनील सोनी, अरुण चढ़ोकार, मंगलमूर्ति बराठे, मदन कुरावले, वरिष्ठ पत्रकार संजय द्विवेदी सहित समिति के सभी सदस्य उपस्थित थे।

मंदिरों में की पूजा-अर्चना

चैत्र मास पर माता मंदिरों में भी पूजा-अर्चना के लिए महिलाओं की भीड़ लगी रही। महिलाओं ने माता माई के दरबार में पूजा-अर्चना कर चैत्र मनाया। मान्यताओं के अनुसार महिलाओं ने आटे के दीपक, श्रृंगार और श्रीफल चढ़ाकर चैत्र मनाया। माता मंदिरों में सुबह से ही महिलाओं की भीड़ लगी रही। जल चढ़ाने और पूजा-आराधना करने के लिए महिलाएं मंदिर पहुंची। इधर हनुमान मंदिरों में भी जल चढ़ाने और पूजा-अर्चना करने के लिए लोग सुबह से ही पहुंच रहे थे। शहर के मंदिरों में सुबह से ही शुरू हुए पूजा-अर्चना के क्रम के कारण समूचा शहर भक्तिमय नजर आया।

शिवलिंग स्थापना में पहुंचे विधायक खंडेलवाल ने दिए 5 लाख, बनाएंगे मंदिर

बैतूल। ग्राम पंचायत कढ़ाई अंतर्गत सोनाघाटी में क्रांतिवीर शमशेर सिंह भोसले नगर में शिवलिंग स्थापना कार्यक्रम में पहुंचे स्थानीय विधायक हेमंत खंडेलवाल ने मंदिर निर्माण के लिए विधायक निधि से 5 लाख देने की घोषणा की। साथ ही विधायक श्री खंडेलवाल ने इस नगर के रहवासियों को विकास की मुख्यधारा में लाने के लिए आगामी एक सप्ताह के भीतर सरकारी सभी विभागों की कैंप लगाकर शासकीय योजनाओं का लाभ देने हर तरह से मदद करने की आश्वासन भी दिया। इसके अलावा इस नगर के बच्चों की पढ़ाई के लिए आंगन बाड़ी केंद्र खोलेंगे और बड़े बच्चों को आई टी आई भारत भारती में दाखिला कराएंगे जिससे यहां के बच्चे टेक्निकल की पढ़ाई कर के आत्मनिर्भर हो सकेंगे। विधायक श्री खंडेलवाल ने इस नगर में अन्य मूलभूत सुविधाएं भी जैसे सड़क बिजली पानी की व्यवस्था कराने का आश्वासन भी दिया जिसे नगरवासियों ने स्वागत किया और खुशी जाहिर की। विधायक श्री खंडेलवाल इस नगर में रात्रि 7:30 से 8:30 बजे तक रुके रहे और वह इन लोगों की विभिन्न समस्याओं से रूबरू हुए और उनका जायजा भी लिया । इसके बाद रात्रि करीब 11:00 बजे केंद्रीय राज्य मंत्री डीडी उईके भी पहुंचे और वे लगभग एक से डेढ़ घंटे तक रुके रहे । मंत्री श्री उईके ने भी हर तरह से मदद करने के आश्वासन दिया है।

इन अतिथियों के मौजूदगी में हुआ कार्यक्रम- बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल के अलावा हिंदी भाषा सलाहकार भारत सरकार प्रवीण गुगनानी, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, विक्रांत कुमरे अधिवक्ता सुप्रीम कोर्ट एवं राज्यपाल सलाहकार भोपाल, प्रकाश उईके पूर्व न्यायाधीश सलाहकार राष्ट्रीय जनजाति नई दिल्ली, घनश्याम मास्कुले लोकायुक्त टीआई भोपाल, सुभाष बरोल क्षेत्र संगठन मंत्री, प्रवीण ढोलके बनवासी अखिल भारतीय कल्याण आश्रम अधिकारी आदि मौजूद थे।

मंत्री डीडी उईके और विधायक खंडेलवाल का हुआ गर्मजोशी से स्वागत- क्रांतिवीर शमशेर सिंह नगर में शिवलिंग स्थापना कार्यक्रम में रात्रि 11बजे पहुंचे बैतूल हरदा सांसद एवं केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उईके का ढोल बाजे के साथ स्वागत सम्मान किया गया। हालांकि इसके पहले रात्रि 7:30 बजे पहुंचे बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल का भी नगरवासियों ने गर्मजोशी से स्वागत किया।

आंगनबाड़ी केंद्र आईटीआई में मनाया पोषण पखवाड़ा

बैतूल। आंगनवाड़ी केंद्र आईटीआई सदर बैतूल में स्थित सभी आंगनबाड़ी केन्द्रों द्वारा 8 से 22 अप्रैल तक पोषण पखवाड़ा कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। जिसके अंतर्गत शुक्रवार 11 अप्रैल को आंगनबाड़ी केन्द्र में समुदाय आधारित पोषण प्रबंधन मॉड्यूल के माध्यम से कुपोषण का प्रबंधन, जिसमें बच्चों के पोषण स्तर की नियमित निगरानी करना, पोषण स्तर के संबंध में परिवार को जागरूक करना, चिन्हित कुपोषित बच्चों की सीएमएएम (समुदाय आधारित पोषण प्रबंधन) कार्यक्रम में पंजीयन एवं पोषण प्रबंधन करना बताया गया। इसके अलावा 10 दिवसीय शारीरिक माप दिवस का आयोजन कर दिवस के लिए निर्धारित बच्चों का वजन एवं लंबाई, ऊंचाई मान कर पोषण ट्रैकर ऐप में दर्ज करना आदि कार्यों की जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम के दौरान बताया कि गर्भावस्था के दौरान पौष्टिक आहार, समय-समय पर स्वास्थ्य जांच, टीकाकरण और स्तनपान की भूमिका बेहद अहम होती है। खासकर नवजात शिशु को जन्म के बाद छह माह तक केवल मां का दूध ही देना चाहिए। यह बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक होता है।

बेकाबू होकर पलटी कार, हादसे में आरक्षक की मौत

बैतूल। शाहपुर स्थित भौंरा चौकी में पदस्थ आरक्षक की देर रात सडक़ दुर्घटना में मौत हो गई। वह वारंट तामील करने के बाद भौंरा लौट रहे थे, तभी रामपुरमाल वन विभाग के डिपो के पास उनकी कार दुर्घटनाग्रस्त हो गई। शाहपुर थाना प्रभारी मुकेश ठाकुर ने बताया कि आरक्षक करण सिंह ठाकुर (30) इटारसी की तरफ से लौट रहे थे। रात में मोड़ पर कार बेकाबू होकर सडक़ से उतर गई और पलट गई। पेड़ से टकराने के कारण सिपाही गेट से बाहर गिर गए, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना की जानकारी सुबह किसी राहगीर ने डायल 100 को दी। पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच की और मृतक की पहचान उनके जेब से मिले आधार कार्ड से की। नर्मदापुरम जिले के होशंगाबाद निवासी करण ठाकुर के शव को पोस्टमार्टम के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शाहपुर ले जाया गया है। अपर पुलिस अधीक्षक कमला जोशी मौके पर पहुंचकर मामले की जांच कर रही हैं। एएसपी कमला जोशी भी शाहपुर में है, उन्होंने विभाग की ओर से परिजनों को एक लाख रुपये की परोपकार राशि दी है।

महिलाओं को पोषण पखवाड़े की थीम पर दी जानकारी

आंगनवाड़ी केंद्र झाड़ेगांव 2 में महिलाओं को बताया पोषण का महत्व

बैतूल। बाल विकास परियोजना बैतूल ग्रामीण के अंतर्गत आने वाले सेक्टर बैतूल-2 के ग्राम झाड़ेगांव में आंगनवाड़ी केंद्र झाड़ेगांव-2 में शुक्रवार को वीएचएनडी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आंगनबाड़ी कार्यकर्ता श्रीमती नीतू मालेवार, एएनएम वंदना मर्सकोले और आशा कार्यकर्ता श्रीमती सुखवंती मरकाम की उपस्थिति में पोषण संबंधी विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सभी महिलाओं को भारत सरकार द्वारा वर्ष 2025 में मनाए जा रहे सातवें पोषण पखवाड़े के बारे में जानकारी दी गई। यह पखवाड़ा 8 अप्रैल 2025 से 22 अप्रैल 2025 तक पूरे देश में मनाया जा रहा है। कार्यकर्ताओं द्वारा इस वर्ष की

थीम से जुड़ी जानकारी भी दी गई और 10 दिवसीय शारीरिक माप दिवस के उद्देश्य तथा प्रक्रिया को विस्तार से समझाया गया। कार्यकर्ता श्रीमती नीतू मालेवार ने अपने मोबाइल में केयर प्रोफाइल के माध्यम से बच्चों के विगत तीन माह के पोषण स्तर का ग्राफ दिखाते हुए महिलाओं को समझाइस दी कि किस प्रकार से बच्चों के पोषण स्तर पर नियमित निगरानी रखी जा सकती है। उन्होंने यह भी बताया कि सही पोषण के लिए क्या-क्या जरूरी है और किस तरह से माता-पिता बच्चों की सेहत को बेहतर बना सकते हैं। एएनएम वंदना मर्सकोले और आशा कार्यकर्ता श्रीमती सुखवंती मरकाम ने भी उपस्थित महिलाओं से संवाद करते हुए उन्हें स्वास्थ्य जांच, टीकाकरण और पोषण आहार की नियमितता के लाभ बताए। वीएचएनडी के माध्यम से ग्राम झाड़ेगांव में महिलाओं को पोषण के प्रति सजग करने का प्रयास किया गया, ताकि आने वाली पीढ़ी स्वस्थ और मजबूत बन सके।

अष्टम महापुराण अग्नि महापुराण के रूप में आज से आरंभ

धार। त्रिमूर्ति नगर स्थित श्री सांवरिया सेठ मंदिर पर 18 महापुराण समिति के तत्वाधान में आयोजित होने वाली अष्टम महापुराण हनुमान जन्मोत्सव के की पावन बेला में प्रारंभ हुई । श्री सांवरिया सेठ मंदिर पर 18 महापुराण का आयोजन समिति के द्वारा करवाया जा रहा है । वर्ष में दो बार दो महा पुराणों का वाचन होता है इस बार श्री सांवरिया सेठ मंदिर पर यह अष्टम महापुराण अग्नि महापुराण के रूप में आज से आरंभ हुई।

महापुराण आरंभ के पूर्व सांवरिया सेठ मंदिर प्रांगण स्थित इच्छापूर्ण त्रिवेणी हनुमान मंदिर धार में श्री हनुमान जी महाराज का जन्मोत्सव बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। इच्छापूर्ण त्रिवेणी हनुमान जी का आकर्षक श्रृंगार किया गया। सुबह 6 बजे हनुमान जी की आरती, हनुमान चालीसा, राम रक्षा स्तोत्र एवं राम स्तुति के साथ महापुराण का आरंभ किया गया । प्रातः 9 बजे श्री सांवरिया सेठ मंदिर से भव्य कलश यात्रा आरंभ हुई । कलश यात्रा में महापुराण झकलाय जिला नर्मदापुरम के प्रसिद्ध कथावाचक पंडित रमाकांत जी व्यास रथ पर सवार थे तथा नगर की माता बहने सर पर कलश धारण किए तथा पुरुष वर्ग पीले वस्त्र धारण कर जुलूस की शोभा बढ़ा रहे थे । शोभायात्रा का जगह-जगह भव्य स्वागत किया गया।

शोभा यात्रा में सांवरिया सेठ मंदिर एवं 18 महापुराण समिति के अध्यक्ष स्वयं प्रकाश सोनी समिति प्रमुख अशोक मनोहर जोशी कोषाध्यक्ष दशरथ सिग्घा ,रितेश शर्मा अश्विन चौहान, महेश शर्मा, देवेंद्र मांडलिक, जगदीश जी जोशी, गोपाल दास गुप्ता, ओमप्रकाश सोलंकी ,गौरव गुप्ता ,प्रताप सिंह रघुवंशी अधिवक्ता ,सुनील रघुवंशी अधिवक्ता ,दीपक जोशी गजेंद्र सिंह चौहान ,जेपी सिंह ,सत्यनारायण शर्मा राजेंद्र प्रसाद शर्मा, चंद्रकला शर्मा , सोनिया जोशी, गरिमा गुप्ता, माया शर्मा, उमा अग्रवाल, स्मिता मंडलोई , सुंदर उपाध्याय , विजयारानी सोलंकी शीला हारने , राधा सिग्गा त्रिमूर्ति नगर के गणमान्य नागरिक शोभायात्रा में शामिल हुए। पूज्य गुरुदेव पंडित रमाकांत व्यास का जगह-जगह स्वागत किया गया ।18 महापुराण समिति अध्यक्ष स्वयं प्रकाश सोनी ने बताया कि आज प्रारंभ हुई अग्नि पुराण में व्यास पीठ पर विराजित पंडित रमाकांत व्यास ने अग्नि पुराण के महत्व को बताते हुए कहा कि अग्नि पुराण हिंदू धर्म के 18 प्रमुख पुराणों में से एक है, । यह पुराण अग्नि देवता द्वारा महर्षि वशिष्ठ को बताया गया था।

अग्नि पुराण के प्रथम दिवस में

अग्नि पुराण में सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय की प्रक्रिया का वर्णन है। धर्म और अध्यात्म के इस पुराण में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के बारे में बताया गया। अग्नि पुराण में विभिन्न देवताओं और ऋषियों की कथाएं हैं, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती हैं। अग्नि पुराण एक महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रंथ है, जिसमें विभिन्न विषयों पर जानकारी दी गई है। इसकी कथाएं और शिक्षाएं जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती हैं और आध्यात्मिक विकास में मदद करती है। जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी डा.अशोक शास्त्री ने बताया कि कथा समापन पश्चात महाआरती प्रसाद वितरण, संध्या हनुमान जन्मोत्सव के उपलक्ष में सुंदरकांड पाठ का आयोजन पंडित श्याम सुंदर दुबे के सानिध्य में हुआ जिसमें नगर के विभिन्न गणमान्य लोगों के साथ-साथ त्रिमूर्ति कॉलोनी के गणमान्य उपस्थित थे।

'डीडीएलजे' के 30 साल

लंदन में लगेगी शाहरुख और काजोल की मूर्तियां

हार्ट ऑफ लंदन बिजनेस एलायंस ने घोषणा की है कि लंदन के लीसेस्टर स्क्वायर में स्थित रोमांचक 'सीन्स इन द स्क्वायर' मूवी ट्रेल में एक नई मूर्ति शामिल होने जा रही है। ब्रिटेन के लीसेस्टर स्क्वायर पर बॉलीवुड अभिनेता शाहरुख खान और अभिनेत्री काजोल की कांस्य की एक मूर्ति लगाई जाएगी। इसमें उन्हें 1995 में प्रदर्शित सुपरहिट फिल्म 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' की उनकी लोकप्रिय मुद्रा में दिखाया जाएगा।

30 वर्ष पूरे होने के जश्न की शुरुआत का प्रतीक भी होगी।

पसंद की जाती है। डीडीएलजे भारत और दुनिया भर के दक्षिण एशियाई लोगों के लिए पॉप संस्कृति का एक अहम हिस्सा है.

दो अप्रवासी भारतीयों राज और सिमरन की प्रेम कहानी है, जो यूरोप और भारत में फैली है और जिसकी शुरुआत किंग्स क्रॉस स्टेशन से एक ट्रेन यात्रा से होती है। यह स्थान उपयुक्त है, क्योंकि लीसेस्टर स्क्वायर 'डीडीएलजे' के उस दृश्य में दिखता है, जब राज और सिमरन पहली बार एक-दूसरे से टकराते हैं। हालांकि वे एक-दूसरे को नहीं पहचानते और फिर यूरोप की यात्रा शुरू होती है। उस दृश्य में लीसेस्टर स्क्वायर के दो प्रमुख सिनेमाघर प्रमुखता से दिखाए गए हैं राज वुए सिनेमा के सामने खड़ा होता है और सिमरन ओडियन लीसेस्टर स्क्वायर के पास से गुजरती है। नई प्रतिमा ओडियन सिनेमा के बाहर, पूर्वी टेरेस पर स्थापित की जाएगी और उस दृश्य को श्रद्धांजलि देगी। फिल्म में लंदन के अन्य स्थान जैसे हॉर्स गॉर्ड्स एवेन्यू, हाइड पार्क, टॉवर ब्रिज और किंग्स क्रॉस स्टेशन भी शामिल हैं।

इस फिल्म ने भारतीय सिनेमा पर गहरा प्रभाव डाला और यह एक ऐसा वैश्विक घटना बन गई कि अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भी भारत की आधिकारिक यात्रा के दौरान इसका उल्लेख किया था। यूके में इस फिल्म का सांस्कृतिक महत्व आज भी बरकरार है। इस पर आधारित एक नया म्यूज़िकल कम फॉल इन लव द डीडीएलजे म्यूज़िकल 29 मई 2025 को मैनचेस्टर ओपेरा हाउस में शुरू होने जा रहा है। सोशल मीडिया पर 140 मिलियन से अधिक फॉलोअर्स के साथ, फिल्म के प्रमुख अभिनेता शाहरुख खान हमारे समय के सबसे पसंदीदा कलाकारों में से एक हैं।

स 20 अक्टूबर 2025 को 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' की रिलीज होने के 30 साल पूरे हो जाएंगे और फिल्म में शाहरुख-काजोल की लोकप्रिय मुद्रा वाली मूर्ति का अनावरण इससे काफी पहले (साल के मध्य तक) कर दिया जाएगा। 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का निर्माण दिवंगत फिल्मकार यश चोपड़ा ने अपने बैनर यशराज फिल्म्स के तले किया था। इस फिल्म के जरिए उनके बेटे आदित्य चोपड़ा ने निर्देशन की दुनिया में कदम रखा था! 'हार्ट ऑफ लंदन बिजनेस एलायंस' ने बताया कि शाहरुख-काजोल की कांस्य मूर्ति लीसेस्टर स्क्वायर पर स्थापित 'सीन्स इन द स्क्वायर' में लगाई जाएगी, जहां विभिन्न फिल्मों की लोकप्रिय मुद्राओं को प्रदर्शित करने वाली कई मूर्तियां पहले से मौजूद हैं। संस्थान ने एक बयान में बताया कि यह मूर्ति लीसेस्टर स्क्वायर पर लगाई जाने वाली किसी भारतीय फिल्म से जुड़ी पहली मूर्ति होगी।

यह फिल्म ब्रिटेन के 5 मिलियन से अधिक दक्षिण एशियाई समुदाय द्वारा कितनी पसंद की जाती है। डीडीएलजे भारत और दुनियाभर के दक्षिण एशियाई लोगों के लिए पॉप संस्कृति का एक अहम हिस्सा है। यह फ़िल्म दो अप्रवासी भारतीयों, राज और सिमरन की प्रेम कहानी है, जो यूरोप से भारत तक फैली है। इसकी शुरुआत किंग्स क्रॉस स्टेशन से एक ट्रेन यात्रा से होती है। यह स्थान और भी उपयुक्त है क्योंकि लीसेस्टर स्क्वायर 'डीडीएलजे' के उस दृश्य में दिखता है, जब राज और सिमरन पहली बार एक-दूसरे से टकराते हैं। हालांकि, वे एक-दूसरे को नहीं पहचानते और फिर यूरोप की यात्रा शुरू होती है।

हार्ट ऑफ लंदन बिजनेस एलायंस ने घोषणा की, कि एक नई मूर्ति लंदन के लीसेस्टर स्क्वायर में स्थित रोमांचक 'सीन्स इन द स्क्वायर' मूवी ट्रेल में शामिल होने जा रही है, और यह सम्मान यशराज फिल्म्स की ऐतिहासिक ब्लॉकबस्टर दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे (डीडीएलजे) को मिला। यह लीसेस्टर स्क्वायर, लंदन में स्थापित होने वाली पहली भारतीय फिल्म की मूर्ति होगी! यह घोषणा डीडीएलजे के

डेब्यू को तैयार अजय देवगन की बिटिया

अ जय देवगन और एक्ट्रेस काजोल की बेटी न्यासा देवगन को लेकर लंबे समय से चर्चा है कि वे फिल्मों में कब कदम रखेंगी। सोशल मीडिया पर उनकी मौजूदगी और स्टाइल ने उन्हें पहले ही काफी पॉपुलर बना दिया है। ऐसे में बेसब्री से इंतजार हो रहा है, कि न्यासा कब बड़े पर्दे पर नजर आएगी। जिस पर अब खुद उनकी मां काजोल ने जवाब दिया।

हाल ही में एक इंटरव्यू में जब काजोल से न्यासा के बॉलीवुड डेब्यू को लेकर सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि न्यासा ने अब तक तय कर

लिया है, कि वह अभी फिल्मों में नहीं आना चाहती. मैं उस पर कोई दबाव नहीं डालना चाहती। काजोल के इस बयान के बाद ये साफ हो गया है, कि फिलहाल न्यासा का बॉलीवुड डेब्यू होने वाला नहीं है।

हालांकि, फैंस को उम्मीद है कि शायद भविष्य में न्यासा अपना मन बदलें और इंडस्ट्री में कदम रखें। काजोल के वर्कफ्रंट की बात करें, तो बातचीत के दौरान काजोल ने अपनी आने वाली फिल्म 'मां' के बारे में भी बात की। उन्होंने बताया कि फिल्म 27 जून 2025 को रिलीज होगी। इसके जरिए काजोल एक बार फिर दमदार रोल में नजर आएंगी।

रियल बॉक्स

देश भक्ति के साथ मसाला मनोज कुमार की पहचान

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

म नोज कुमार के न रहने को आज के दौर से ज्यादा 90 के दशक से पहले के दर्शकों ने गंभीरता से महसूस किया। उस दौर के सिनेमा में जिन अभिनेताओं को पसंद किया जाता रहा, उनमें मनोज कुमार भी एक थे। वे सिर्फ अभिनय ही नहीं करते रहे, उन्होंने फ़िल्में बनाने का जोखिम भी मोल लिया, जो आज के मुकाबले उस समय ज्यादा मुश्किल था। उन्होंने ऐसे विषयों का चुनाव किया, जो लीक से हटकर कहे जा सकते हैं। इन्हीं में एक देशभक्ति और सामाजिक समस्याएं था। उनकी फिल्मों के देशभक्ति वाले कथानक की वजह से मनोज कुमार के नाम के साथ 'भारत कुमार' ऐसे चस्पा हो गया कि उन्हें इसी नाम से पुकारा जाने लगा। 'उपकार' से उन्होंने फिल्म निर्माण में कदम रखा और सामाजिक विषयों को ऐसी पहचान बना लिया कि दर्शक उनसे ऐसी ही फिल्मों की अपेक्षा करने लगे। अपने आधे चेहरे को हाथ की उंगलियों से ढकने की उनकी स्टाइल उनकी पहचान जैसी बन गई थी।

उनकी यादगार फिल्मों में 'शहीद' (1965) शामिल है, जो भगत सिंह के जीवन पर बनी थी। पूरब और पश्चिम (1970) की कहानी सांस्कृतिक पहचान पर बनाई गई, रोटी कपड़ा और मकान (1974) जीवन की जरूरतों और सामाजिक मुद्दों को कुरेदती थी और 'क्रांति'(1981) देश के स्वतंत्रता संग्राम पर बनी एपिक फिल्म रही। जबकि, 'शोर' पारिवारिक फिल्म थी, जिसमें भी एक संदेश दिखाई दिया। लेकिन, मनोज कुमार के फिल्म निर्माण का भी एक फार्मूला था। उनकी देशभक्ति वाली फिल्मों में दर्शकों को बांधने के लिए वो सब कुछ होता था, जो जरूरी है। फिल्मों में नए-नए प्रयोग करते हुए मनोज कुमार इतने विश्वसनीय हो गए थे कि उनकी फिल्म में वे जो भी प्रयोग करते, सहयोगी कलाकार आंख मूंदकर सब करते जाते।

इस विश्वसनीयता का फायदा उठाते हुए मनोज कुमार ने देशभक्ति का मुलम्मा चढ़ाते हुए अपनी फिल्मों में वह सब शामिल कर लिया, जो आमतौर पर मुश्किल होता है। मनोज कुमार ही थे जिन्होंने 'रोटी कपडा और मकान' में हाय हाय रे यह मजबूरी में जीनत अमान को जी भरकर भिगोया। आटे की बोरियों और तराजू के पलड़ों पर मौसमी के रेप सीन को लसलसे तरीके से फिल्माकर दर्शकों की सांसों को गर्म किया। उन्होंने इसी फार्मूले को अपनाते हुए 'पूरब पश्चिम' में सायरा को ग्लैमर में ढालकर दिखाया, 'यादगार' में नूतन जैसी पारिवारिक अभिनेत्री को स्विमिंग सूट पहनाया और 'क्रांति' में हेमा मालिनी जैसी सात्विक समझी जाने वाली नायिका को न केवल पानी में तरबतर किया, बल्कि चतुराई से उनके मादक शरीर को परोसकर बॉक्स ऑफिस पर सिक्के बरसवा लिए। बावजूद उनकी फिल्मों में देशभक्ति का जज्बा जरा भी कम नहीं हुआ।

साल 1961 में मनोज कुमार को बतौर हीरो 'कांच की गुड़िया' से ब्रेक मिला। इसके अगले साल विजय भट्ट की फिल्म 'हरियाली और रास्ता' ने उनकी ज़िंदगी का रास्ता बदल दिया। 40 साल के फिल्म करियर में मनोज कुमार ने कई फिल्मों में काम किया और खुद भी फिल्में बनाई। इन सभी फिल्मों में उन्होंने फिल्म के कॉन्टेंट और फ़ॉर्म पर लगातार अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कहानी लिखने में उनकी महारत थी। वो जानते थे, कि भारतीय दर्शक भावुक होते हैं, इसलिए वो ऐसी कहानियां रचते थे, जिनसे दर्शक आसानी से जुड़ाव महसूस कर सकें। उनकी हर फिल्म में हर दर्शक के लिए कुछ न कुछ होता था। 'शोर' एक परिवार की खूबसूरत कहानी थी, जिसने मनोज कुमार को निर्देशक के तौर पर स्थापित किया।

मनोज कुमार के करियर की शुरुआत 1975 में आई फिल्म फैशन (1957) में एक छोटे से किरदार से हुई। पर, उन्हें असली पहचान 1962 में आई फिल्म 'हरियाली और रास्ता' से मिली। अभिनय के बाद उन्होंने निर्देशन में भी हाथ आजमाया और इसकी शुरुआत 1965 में आई फिल्म 'शहीद' से की। इसकी कहानी भगत सिंह के जीवन पर आधारित थी। 1967 में मनोज कुमार ने तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के कहने पर उनके 'जय जवान जय किसान' नारे पर 'उपकार' बनाई। 'उपकार' भले ही लाल बहादुर शास्त्री के कहने पर बनी, लेकिन वे इसे देख नहीं सके। 1966 में शास्त्री जी ताशकंद के दौरे पर गए थे। लौटने के बाद वे फिल्म देखते, लेकिन ताशकंद में ही इंडो-पाकिस्तान वॉर में शांति समझौता साइन करने के अगले दिन 11 जनवरी 1966 को उनकी मौत हो गई। इसके एक साल बाद 11 अगस्त 1967 को फिल्म रिलीज हुई। शास्त्री जी को फिल्म न दिखा पाने का अफसोस ताउम्र मनोज कुमार को रहा। फिल्म हिट रही और इसके गाने ऐ वतन, ऐ वतन हमको तेरी कसम, सरफरोशी की तमन्ना और 'मेरा रंग दे बसंती चोला' काफी पसंद किए गए।

मनोज कुमार ने देश भक्ति की आड़ में केवल अंग प्रदर्शन का फार्मूला आजमाकर ही सफलता नहीं बटोरी। फिल्मों के तकनीकी पक्ष, कैमरा और फाइटिंग सीन में भी उनकी जबरदस्त पकड़ थी। 'उपकार' और 'शोर' की फाइटिंग सिक्वेंस एकदम वास्तविक जैसी लगती है। 'शोर' में झूले का प्रयोग और बिजली की लुकाछिपी के दृश्य अद्भुत थे। 'पूरब पश्चिम' की पहली कुछ रील ब्लैक एंड व्हाइट थी। लेकिन, ब्रिटिश सरकार यूनियन जैक के उतरते ही तिरंगे के चढने के साथ फिल्म का कलर में बदलना ऐसा प्रयोग था, जिसे उस समय करना तो दूर सोचना भी मुश्किल था। भाई की असफलता, पिता की मौत और पारिवारिक विवाद से तंग आकर मनोज कुमार ने शराब में डूबकर अपना तो बड़ा नुकसान किया लेकिन उन दर्शकों का भी भारी नुकसान किया जो आज के परिप्रेक्ष्य में देश की समस्याओं का कुछ सार्थक समाधान ढूंढने के लिए सिनेमाघर का अंधेरा कौना तलाशते नजर आते हैं।

बचपन से ही वे दिलीप कुमार के बड़े प्रशंसक थे। दिलीप साहब की फिल्म शबनम (1949) मनोज कुमार को इतनी पसंद आई थी कि उन्होंने उसे कई बार देखा। फिल्म में दिलीप कुमार का नाम मनोज था। जब मनोज कुमार फिल्मों में आए तो उन्होंने दिलीप कुमार के नाम पर ही अपना नाम भी मनोज कुमार कर लिया। बाद में मनोज कुमार ने अपने निर्देशन में बनी फिल्म क्रांति (1981) में दिलीप कुमार को डायरेक्ट भी किया। उन्हें फिल्म मिलने की घटना भी किसी फ़िल्मी घटना से कम नहीं थी। एक दिन जब लाइट टेस्टिंग के लिए मनोज कुमार हीरो की जगह खड़े थे। लाइट पड़ने पर उनका चेहरा कैमरे में आकर्षक लग रहा था। एक डायरेक्टर ने उन्हें 1957 में आई फिल्म 'फैशन' में एक छोटा सा रोल दिया। रोल छोटा जरूर था, लेकिन मनोज कुछ मिनट की एक्टिंग में अपनी छाप छोड़ने में कामयाब रहे। उसी रोल की बदौलत मनोज कुमार को फिल्म कांच की गुड़िया (1960) में लीड रोल दिया गया। पहली कामयाब फिल्म देने के बाद मनोज ने रेशमी रुमाल, चांद, बनारसी ठग, गृहस्थी, अपने हुए पराए, वो कौन थी जैसी कई फिल्में दीं।

मनोज कुमार को विलेन का किरदार निभाने वाले प्राण की इमेज बदलने का भी श्रेय दिया जाता है। 1966 में आई फिल्म 'दो बदन' में मनोज कुमार ने पहली बार प्राण के साथ काम किया और दोनों दोस्त बन गए। प्राण को तब फिल्मों में निगेटिव रोल मिलते थे। ऐसे में उनकी छवि बदलने के लिए मनोज कुमार ने उन्हें अपनी फिल्म 'आह' में पॉजिटिव रोल दिया। पर, ये फिल्म फ्लॉप रही, दर्शकों ने प्राण को नापसंद किया। इसके बाद मनोज कुमार ने अपनी फिल्म 'उपकार' में उन्हें मलंग बाबा का रोल देने का फैसला किया। फिल्म में अपना किरदार पढ़ने के बाद प्राण ने कहा भी था कि स्क्रिप्ट और मलंग का किरदार दोनों बहुत खूबसूरत हैं। लेकिन, एक बार सोच लो। मेरी छवि खूंखार, शराबी, जुआरी और बलात्कारी की है। क्या दर्शक मुझे किसी साधु के रोल में अपना सकेंगे। इसके बाद फिल्म में मलंग बाबा का किरदार जिस तरह लोकप्रिय हुआ वो आज भी याद किया जाता है।

'पूरब और पश्चिम' में उन्होंने मदन पुरी के साथ यह फार्मूला अपनाया। घाघ और स्वार्थी इंसान की भूमिका के लिए बदनाम मदनपुरी को मनोज कुमार ने विदेशी में बसे एक असहाय बाप के रूप में इतनी सहजता से पेश किया कि उनका रंग ही बदल गया। प्राण और मदन पुरी के अलावा प्रेमनाथ से भी उन्होंने 'शोर' में दबंग और दयावान पठान की भूमिका करवाकर उनका कायाकल्प कर दिया। इसी तरह प्रेम चोपड़ा, जोगिंदर और मनमोहन की इमेज को बदलने में भी मनोज कुमार कामयाब रहे। वे पहले फिल्मकार थे, जिन्होंने पाकिस्तानी कलाकारों को हिंदी फिल्मों में मौका दिया। लेकिन, अब ये सब बीती बातें हो गई। अब सिर्फ उनकी फ़िल्में ही बची हैं, जो उनकी याद को ताजा करती रहेंगी कि एक थे मनोज कुमार!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

'इंडियन आइडल' पर संगीत कम पाखंड ज्यादा !

अशोक जोशी

'इंडियन आइडल' के निर्माताओं की ज्यादा रुचि प्रतिभागियों की गायन प्रतिभा को निखारने में नहीं, बल्कि उनकी भूख गरीबी और अवसाद को दिखाने में है। अगर आप रीजनल

रियलिटी शो देखते हैं, तो वहां दर्शकों को प्रतिभागियों के बारे में शायद ही पता होगा। उनका पूरा ध्यान सिर्फ गायन पर होता है, लेकिन नेशनल शो में प्रतिभागी के जूते पॉलिश करने की कहानी, उनके मां-बाप कैसे बदहाली में जी रहे हैं, इसके अलावा अब तो शो में झूठी प्रेम कहानी दिखाने में ज्यादा दिलचस्पी दिखा रहे हैं।

इं डियन आइडल सीजन 15 का ग्रैंड फिनाले 6 अप्रैल 2025 को हुआ। इसमें टॉप 5 कंटेस्टेंट्स में स्नेहा शंकर के अलावा सुभजीत चक्रवर्ती, अनिरुद्ध सुस्वरम, प्रियांशु दत्ता, मानसी घोष और चैतन्य देवधे शामिल रहे। मानसी घोष ने 'इंडियन आइडल 15' की ट्रॉफी अपने नाम कर ली। इसके साथ ही 25 लाख रुपये की प्राइज मनी के साथ मारूति कार भी अपने नाम की। यह बात अलग है कि हर बार की तरह इस बार भी नतीजे आम दर्शकों की अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहे। लोगों का मानना था कि इस बार यह ट्रॉफी स्नेहा शंकर या चैतन्य देवधे मे से किसी को मिलना थी लेकिन जिस तरह से मानसी घोष का नाम आखिर में सबसे ऊपर आया उसे देखकर सभी हैरान हैं।

पर्दे के पीछे से यह खबरें आ रही है कि टीवी चैनलों पर प्रसारित होने वाले रियलिटी शो में रियलिटी जैसा कुछ नहीं होता। वह ड्राफ्टेड या स्क्रिप्टेड होते हैं। यह बात सोनी टीवी पर इन दिनों सप्ताहांत प्रसारित होने वाले सिंगिंग रियलिटी शो इंडियन आइडल पर दोहरी साबित होती है। एक तो इसमें रियलिटी जैसी कुछ बात नहीं है दूसरे इसका नाम भी अपनी कसौटी पर खरा नहीं उतरता। वैसे आइडल का अर्थ प्यारा भी होता है और बेहूदा और बकवास भी। लेकिन जिस तरह से एक के बाद एक इसकी परत उधड़ती जा रही है उससे अब यह कहा जा सकता है कि अब यह किसी तरह से आइडियल नहीं रहा है।

शो की प्रस्तुति से लेकर प्रतिभागियों के चयन तक सभी का एक सेट फॉर्मेट हाता है। इसमें जिस तरह से प्रतिभागियां का चयन किया जाता है, उस पर भी बार-बार अंगुलियां उठती रही है। लगता है कि इस शो के आयोजकों का एक बंधा बंधाया फार्मेट है, जिसमें कुछ मध्यमवर्गीय परिवार के लोग, कुछ दूर दराज के तो कुछ भूख से परेशान घरों से आए लोग हैं जो दाने दाने को

मजबूर है। सवाल यह उठता है कि जिन लोगों का ध्यान रोटी से जरा भी नहीं हटता उनके पास इतने संसाधन कैसे उपलब्ध हो जाते हैं कि वह दूरदराज से आकर न केवल प्रतियोगिता के लिए आवेदन करते हैं, बल्कि महानगरों तक आकर ऑडिशन देने तक में सफल हो जाते हैं।

इस बारे में शो के पूर्व विजेता अभिजीत सावंत आरोप लगा चुके हैं कि यह संगीत का कार्यक्रम है न कि गरीबी दिखाओ योजना का कोई हिस्सा है। अभिजीत ने एक इंटरव्यू के दौरान शो से संबंधित कुछ अहम खुलासे किए। उन्होंने कहा था कि आजकल रियलिटी शो के मेकर्स किसी प्रतिभागी के टैलेंट से ज्यादा इस बात पर ध्यान देते हैं कि वह कितना गरीब है। इतना ही नहीं अभिजीत सावंत ने आगे कहा कि अगर आप रीजनल रियलिटी शोज देखेंगे तो उनमें दर्शकों को शायद ही कंटेस्टेंट के बैकग्राउंड के बारे में पता होगा। वहां लोग सिर्फ सिंगिंग पर ध्यान देते हैं, लेकिन हिंदी रियलिटी शोज में प्रतिभागियों की दुख भरी कहानियों को ज्यादा सुनाया जाता है।

इंडियन आइडल की गिरावट का सबसे बड़ा कारण है उसके बासी हो चुके निर्णायक और उबाऊ प्रस्तुतकर्ता अर्थात एंकर। शो का आरंभ एंकर आदित्य नारायण सिंह की बकवास शुरू होता है। उनकी असफलता का सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि गायक के रूप में नकार दिए जाने के बाद वह एंकर का दायित्व ग्रहण कर दर्शकों को इतना ज्यादा ऊबा चुके हैं कि उन्हें अब आदित्य नारायण की हरकतों पर खीज होने लगी है। ऐसा नहीं कि आदित्य इंडियन आइडल पर ही तमाशा कर रहे है। टीवी के बाहर सार्वजनिक जगहों पर तमाशे कर चुके हैं और इस शो के मंच पर भी उनकी बकवास जारी है। इस बार तो सोनी ने एक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आदित्य नारायण के माता

पिता को बुलाकर इसे परिवारवाद का जीता जागता उदाहरण बना दिया। सोनी के इस कदम की सभी जगह थू थू हो रही है।

इतना ही नहीं शो में प्रदर्शन का स्तर इतना गिर चुका है कि इसमें गानों के साथ-साथ उटपटांग हरकतों को हाईलाइट किया जाने लगा है। इसमें आए दिना प्रतिभागियों का बेहद मजाक उड़ाया जाता है। उन्हें अजीबोगरीब कपड़े पहनाकर अजीब हरकतें करने को कहा जाता। कभी बंदरों की तरह हरकत करने को कहा जाता है। एक सीरीज में एक गायक और एक गायिका की मनगढ़ंत प्रेम कहानी के परम्परागत तरीके से आगे बढ़ाया जाता है। हर बार ऐसा ही होता है बस चेहरे बदल गए है। कभी पवन राजन तो अयोध्या से आए शो के विजेता ऋषि सिंह तो अरूणिता तो कभी बिदिप्ता चक्रवर्ती इसकी पात्र होती हैं।

अब तो इस शो के मेहमान भी स्थायी हो गए हैं। थोड़े अंतराल के बाद धर्मेन्द्र, आशा पारेख और उदित नारायण सिंह तो कभी प्यारेलाल या आनंदजी सपत्नीक आ जाते हैं। कुछ कमी रह जाती हैं, तो गोविंदा सपत्नीक आकर उलजुलूल हरकतें करते है। एक एपिसोड में नेहा कक्कड़ और उनके पति ने कैमरे के सामने जिस तरह चिपका चिपका की उससे यह पारिवारिक शो की जगह ओटीटी की सीरिज ज्यादा लग रहा था। उसके बाद एक एपिसोड में फिल्मो से बोरिया बिस्तर बांध चुकी रीना राय और जया प्रदा आ गई।

शो की कंटीन्यूटी को लेकर भी कई बार प्रश्न चिन्ह उठते रहे हैं। एक कार्यक्रम के दौरान अमित कुमार ने एक प्रतिभागी को एक हाथ घडी यह कहकर उपहार में दी कि यह किशोर कुमार की घड़ी है। कार्यक्रम के दूसरे गाने के दौरान वह घड़ी फिर से अमित कुमार के हाथों में दिखाई दी। इसी तरह हाल ही में जब राकेश रोशन आए थे तो उनकी हाथ घडी कभी दाएं हाथ में दिखती थी तो कभी बाएं हाथ में। इस तरह की खामियां शो के तकनीकी पक्ष पर प्रश्नचिन्ह लगाती हैं।

अजीबो गरीब कहानियों, उटपटांग हरकतों के अलावा इंडियन आइडल पर एक इल्जाम यह भी लगता रहा है कि इसके सभी एपिसोड स्क्रिप्टेड या पहले से लिखी पटकथा पर आधारित होते हैं। कहने को यह लाइव प्रोग्राम होता है। लेकिन, इसके एक एक डायलॉग और घटनाक्रम पहले से तयशुदा होते हैं। अमित कुमार पहले ही आरोप लगा चुके थे कि उनसे किसी खास प्रतिभागी की तारीफ करने को कहा गया जिसके लिए उन्होने मना कर दिया। ख्याति प्राप्त गायक शान भी कह चुके हैं कि सभी कार्यक्रम स्क्रिप्टेड होते हैं और एक बार गाने के बाद उसे स्टूडियो में ठीक कर प्रस्तुत किया जाता है।

हाल ही में समाप्त हुए इंडियन आयडल के एक शो में हेमामालिनी आई थी। इस कार्यक्रम की एक क्लिप लीक हुई थी जिसमें हेमा मालिनी के हाथों में लिखी हुई स्क्रिप्ट थी जिसके अनुसार उन्हें कार्यक्रम करना था। इससे इस रियलिटी शो की रिएलिटी पर शंका होने लगती है। पहले कभी इस शो को देखने के लिए दर्शक सप्ताहांत का इंतजार करते रहते थे लेकिन अब यदि उनसे यह शो छूट भी जाए तो उन्हें कोई मलाल नहीं होता। क्योंकि, अब इंडियन आइडल किसी भी दृष्टि से आइडियल नहीं रहा है।

इस 'बंदी' में, कितना 'खुलापन' है...!

प्रकाश पुरोहित

आपको पता है, अहमदाबाद में ही महंगी और बड़ी कारवाले ने नौ लोगों को उड़ा दिया था और उनका कुछ नहीं हुआ। यहां हर रात नशे में गाड़ियां दौड़ाई जाती हैं और टकराते रहते हैं। मरता गरीब आदमी ही है। रात में यहां इतनी शराब बहती है, जितना साबरमती में पानी भी नहीं बहता होगा।' टैक्सी ड्रायवर भाविक ने बताया।

'लेकिन यहां तो शराबबंदी है ना?'

'तभी तो ज्यादा बिकती और खरीदी जाती है, पी जाती है। कौन-सा ब्रांड और कितना चाहिए, यहां सब आसानी से मिल जाता है। बाहर से भी अपने वाले इतना डॉलर और पौंड भेजते हैं कि पैसे की कोई कमी नहीं है। गरीब का ही मरण है, वरना तो यहां कोई कमी नहीं है।' उसने बताया।

'तो पुलिस...?'

'हां, दिखाने के लिए कभी-कभार धरपकड़ हो जाती है, वरना क्या पुलिस को पता नहीं होता है कि कहां, कितनी बिक रही है। पुलिस की जानकारी के बगैर तो यहां एक बूंद भी नहीं बिक सकती। इनके बड़े हिस्से होते हैं इस धंधे में। राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश में भी इतनी शराब नहीं होगी, जितनी यहां गुजरात में है, क्योंकि भाव ज्यादा मिलता है और खपत भी ज्यादा होती है।' जानकारी दी उसने।

'तो शराबबंदी खोल क्यों नहीं देते, खत्म कर देते।'

'पुलिस और नेता ऐसा कभी नहीं होने देंगे, क्योंकि इनकी कमाई का सबसे बढ़िया जरिया ही शराब है। करना कुछ नहीं है, माहवारी बंदी है या फिर हिस्सेदारी है। अब तो सरकार चाहे भी तो शराबबंदी खत्म नहीं कर सकती। देखिए, यहां पुलिस चालान तभी बनाती है, जब टारगेट पूरा करना होता है। अभी बगैर सीट-बेल्ट के कार पर दस हजार तक का चालान है और हेलमेट पर पांच हजार, लेकिन देख लीजिए, कितने लोग हेलमेट लगाए हैं और सीट-बेल्ट का तो यह है कि पक्की तरह से फिट कर दिया है बेल्ट पीठ पीछे से निकला रहता है और लगाना भी जरूरी नहीं। लोगों के हिसाब से तो इतनी शरीफ पुलिस शायद ही कहीं होगी। आज तो कांग्रेस के बड़े नेता आ रहे हैं तो फिर भी पुलिस नजर आ रही है, वरना सड़क पर पुलिस देखने को तरस जाएं। फिर चालान में मिलता ही कितना कम है और वह भी सरकारी खजाने में जमा होता है तो फिर कोई क्यों गधा-हम्माली करने लगा।'

'करीब पचहत्तर लाख की आबादी हो रही है अहमदाबाद की, लेकिन कस्बाई आदतें ही यहां नजर आती हैं। ट्रैफिक के नियम कोई पालता नहीं है कि आसानी से लाइसेंस मिल जाते हैं। एक बार लाइसेंस मिल गया तो फिर जिंदगी भर देखने की जरूरत नहीं, जबकि साल-दो साल में इनकी जांच होनी चाहिए। जिसे स्टेयरिंग पकड़ना आ गया, वही ड्रायवर हो जाता है।' लालसिंह ड्रायवर की शिकायत थी। 'शहर के हिसाब से जितने सिग्नल होने चाहिए, चौथाई भी नहीं हैं। यह तो यहां के लोगों का ही जिगरा है कि आड़े-तिरछे होकर यहां-वहां से निकल लेते हैं।'

'यहां गंदगी की बात करें तो फौरन सवाल आता है आप क्या इंदौर के हैं? बेहद गंदगी है और लोग भी इसके आदी लगते हैं कि कोई जहमत नहीं उठाते। सड़कों पर प्लास्टिक के ढेर नजर आते हैं। लगता है यहां प्लास्टिक की थैलियों पर भी कोई रोक नहीं है। जब मुख्यमंत्री की बात करें तो यही जवाब आता है कि व्यापारी आदमी है, लोग तो ठीक से नाम भी नहीं जानते। मोदी-शाह को ऐसे ही लोग परवड़ते हैं, जो उनके इशारों पर काम करें और अपनी मर्जी का कुछ ना करें, तभी तो आनंदी बेन और रुपाणी चल नहीं पाए।'

यहां यह बात मजेदार है कि दोपहर का भोजन और झपकी जरूरी है, इसलिए दोपहर बाद से बाजार ठंडा हो जाता है तो फिर शाम को ही रोशन होता है, जबकि अपने यहां बाजार उठता ही ग्यारह बजे के बाद है।

चिंतन

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

जीवन से बहुत गहरे स्तर पर जोड़ती है पुस्तक संस्कृति

पुस्तकें इस तरह से हमारे भीतरी संसार को रचने गढ़ने का काम करती है। आप कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास और मीराबाई को पढ़ते हैं, भक्ति साहित्य से अपने जीवन और अनुभव संसार को यदि समृद्ध करते हैं तो निश्चित है कि आपके सोचने का जो तरीका होगा वह व्यापक संसार के साथ जुड़ने और संवेदना की भूमि पर संस्कृति को समझने वाला होगा। आपके भीतर एक सहज मनुष्य की यात्रा आसानी से अनुभव की जा सकती है। कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक तथा विचार साहित्य हमारे जीवन को समृद्ध बनाने का काम करते हैं। पुस्तकें सीधे सीधे एक अनुभव संसार से जोड़ने का काम करती हैं। जब आप पुस्तक पढ़ते हैं तो लेखक की उस दुनिया में पहुंच जाते हैं जो लेखक ने अपनी पुस्तक में दी है। हर पुस्तक अपने आप में एक दुनिया हो जाती है। होता क्या है कि आप हर जगह हर संसार में नहीं जा सकते हैं और न ही सब तरह का अनुभव कोई एक व्यक्ति ले सकता है पर हर तरफ से पुस्तकें ज्ञान का दरवाजा खोलती हैं।

पुस्तकें पढ़ना पुस्तक संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। जब हम पुस्तक पढ़ते हैं तो एक जीवन यात्रा से गुजरते हैं।

हमारे सामने एक पूरा संसार, एक जीवन प्रणाली और उसमें जीवन जी रहे लोगों की कहानियां होती हैं जिसको पढ़ना उस पूरी दुनिया के साथ जुड़ जाने से होता है। किसी भी जीवन संसार को हम यूं ही स्वीकार नहीं कर लेते हैं बल्कि पुस्तकें हमें उस दुनिया से सीधे सीधे जोड़ देती है। पुस्तक के बीच समय को समझना, जीना और जीवन अनुभव से एक साथ गुजरना होता है। जब हम किसी पुस्तक को पढ़ना शुरू करते हैं तो उस दुनिया में पहुंच जाते हैं जिधर पुस्तक ले जाती है। हमें बराबर से यह लगता है कि यह जो कुछ दुनिया शब्दों की यात्रा में दी जा रही है वह मेरी ही है। उस किताब में, उस यात्रा में उस समय में हम पूरी तरह घुल मिल जाते हैं। हमारी दुनिया अलग न होकर उस किताब से ऐसे जोड़ लेती है कि हम कहीं भी अलग नहीं होते उस किताब के साथ साथ ही हम भी चलने लगते हैं। पुस्तकें इस तरह से हमारे भीतरी संसार को रचने गढ़ने का काम करती है। आप कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास और मीराबाई को पढ़ते हैं, भक्ति साहित्य से अपने जीवन और अनुभव संसार को यदि समृद्ध करते हैं तो निश्चित है कि आपके सोचने का जो तरीका होगा वह व्यापक संसार के साथ जुड़ने और संवेदना की भूमि पर संस्कृति को समझने वाला होगा।

आपके भीतर एक सहज मनुष्य की यात्रा आसानी से अनुभव की जा सकती है। कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक तथा विचार साहित्य हमारे जीवन को समृद्ध बनाने का काम करते हैं।

पुस्तकें सीधे सीधे एक अनुभव संसार से जोड़ने का काम करती हैं। जब आप पुस्तक पढ़ते हैं तो लेखक की उस दुनिया में पहुंच जाते हैं जो लेखक ने अपनी पुस्तक में दी है। हर पुस्तक अपने आप में एक दुनिया हो जाती है। होता क्या है कि आप हर जगह हर संसार में नहीं जा सकते हैं और न ही सब तरह का अनुभव कोई एक व्यक्ति ले सकता है पर हर तरफ से पुस्तकें ज्ञान का दरवाजा खोलती हैं। किसी भी समय, समाज और उस संसार के बारे में जानने के लिए पुस्तकों के अलावा हमारे पास कोई और साधन नहीं है। हो सकता है पुस्तक का रूप बदल गया हो अब आप चाहें तो आनलाइन फार्मेट में पुस्तकें पढ़ सकते हैं, पीडीएफ फाइल के रूप में पढ़ सकते हैं पर अभी भी भौतिक रूप से पुस्तक जब सामने होती है तो उसको पढ़ने का आनंद ही अलग होता है। पुस्तक आपको बड़ी दुनिया से जोड़ने का काम करती है वह आपका विस्तार करती है। आपको एक व्यापक अनुभव होता है।

पुस्तकें अपनी रूचि के हिसाब से ही पढ़ी जाती हैं। अब यह आप पर है कि आपको क्या अच्छा लगता है उसे खोजें और पढ़ें उस दुनिया से जुड़ने की कोशिश करें जो आपकी पसंद की दुनिया हो फिर उस संसार को और बेहतर तरीके से आप जानने लगते हैं, उस एरिया के आप विशेषज्ञ से हो जाते हैं। यदि आपकी रूचि कविता और कहानी पढ़ने की है तो आपको कविता और कहानी की किताबें नई से नई और पुरानी से पुरानी लेकर जरूर पढ़नी चाहिए। यदि आपकी रूचि वैचारिकी और सैद्धांतिक चिंतन में है तो सिद्धांत को पढ़ने की कोशिश करेंगे। जब आप अपनी रूचि और अपने हिसाब से चिंतन मनन में मगन होते हैं तो जो कुछ भी सीखते हैं उसमें आप एक पहुंचे हुए आदमी हो जाते हैं।

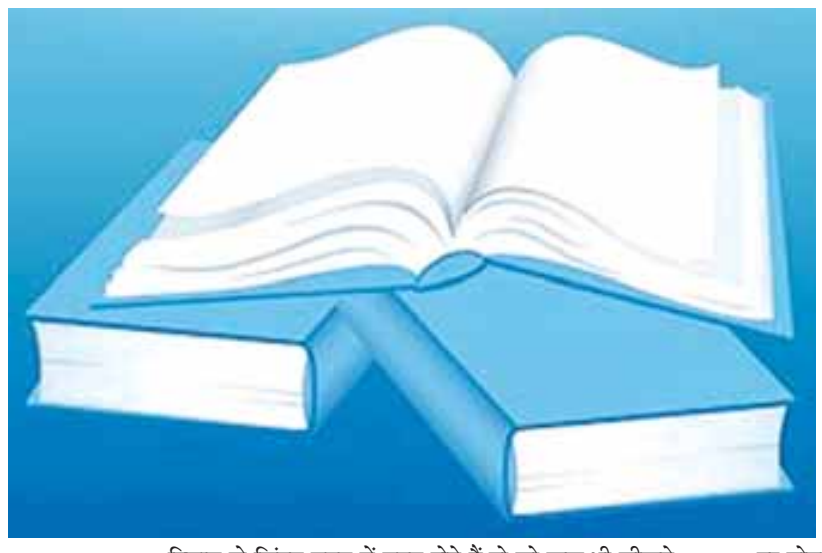

पुस्तकें ही आपको हर समय समाज में लेकर चलती हैं। पत्र, पत्रिकाएं और पुस्तक एक अलग ही तरह का अनुभव बनाते हैं। आप पढ़ते समय विचारों के साथ अपने ज्ञान और अपने मस्तिष्क की स्पार्किंग कराते हैं जिससे चीजें आपके हिसाब से खुलनी शुरू होती है। हर पुस्तक नये सिरे से आपको बतलाती है कि दुनिया कहां है और आप कहां हैं क्या सोच रहे हैं और आपका सोचना कहां तक सही है। क्योंकि जो दुनिया जो समय जो समाज लेखक लेकर आता है उसके पीछे एक जीवन अनुभव और तर्क होता है। आप कहां तक समाज को समझ पाते हैं यह आपके अनुभव संसार और लगातार पुस्तकों की दुनिया से जुड़ने का ही परिणाम होती हैं। पुस्तकें एकांत में आपसे सत्संग करती हैं और आपको सामाजिक बनाने के साथ साथ बड़ी दुनिया का आदमी बनाती हैं। पढ़ने का जो आनंद है वह कहीं और नहीं। पढ़ते पढ़ते न जाने कितने विचारों से साक्षात्कार होता है कहीं ससमति में मन गदगद होता तो कहीं असहमति का अपना ही अर्थ होता है। सहमति और असहमति के बीच ज्ञान चर्चा, परिचर्चा सब मन मस्तिष्क में चलता रहता है। एक साथ अपने संसार से निकल कर अन्य संसार में पढ़ते हुए ही जाया जा सकता है। पढ़ना हर हाल में कठिन पर आंनद देने वाला कार्य है। आजकल जरूर स्क्रीन पर लोग-बाग ज्यादा व्यस्त होने से पढ़ने के आनंद से दूर होते जा रहे हैं। इसका बड़ा परिणाम यह भी दिख रहा है कि अब स्मृति लोप होता जा रहा है किसी को कुछ याद नहीं रह रहा है हर बात के लिए हर संदर्भ के लिए गूगल सर्च करने की अब आदत सी विकसित हो गई है। हालत तो यह हो गई है कि कोई शब्द लिख रहे हैं और लगता है कि शायद यह सही न हो तो तुरंत गूगल करते हैं, अपनी स्मृति पर या अपने पढ़ें पर अब भरोसा कम होता जा रहा है। पहले के पढ़ें लिखे लोगों में यह दिक्कत कम देखने को मिलती है पर मोबाइल पर दिन-रात अपडेट रहने वाली पीढ़ी पढ़ने पर कम, सर्च कर लेने पर और सर्च इंजन पर ज्यादा भरोसा करने लगी है। यह अलग बात है कि इस क्रम में आंखें खराब हो रही हैं, मन मस्तिष्क किसी एक बात पर केंद्रित नहीं रहता और अधैर्य का जो शिकार हो रहे हैं वह तो अलग है ही। आज बराबर से यह महसूस होता है कि मोबाइल को कैसे रखा जाए और कुछ समय निकाल कर पढ़ा जाएं, कुछ सोच कर कर समझ कर चलने का क्रम बनाने की बड़ी जरूरत है। मोबाइल टाइम को कुछ कट कर यदि पढ़ने भर के लिए समय निकाला जाएं तो तय है कि हमारे समय समाज में आनंद और सुकून की वृद्धि हो सकती है।

स्कूल (क्यों) जाएंगे हम...!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

कोविड की वजह से दुनिया लॉकडाउन समझी और पूरे पांच बरस हो गए। कई नए चलन जिंदगी में आए, जैसे वर्क फ्रॉम होम, आइसोलेशन और ऑनलाइन बैठक। सभी में उतार-चढ़ाव है, लेकिन अब ऐसा दौर शुरू हुआ जो बढ़ता ही जा रहा है। लॉकडाउन और आइसोलेशन की घर में पढ़ाई करवाते मां-बाप को एहसास हुआ कि स्कूल जाए बगैर भी बच्चा बेहतर सीख सकता है और आसानी से जिंदगी जी सकता है।

स्कूली बच्चों को सुबह से शाम तक सिवाय तनाव के कुछ हासिल नहीं होता। सुबह आधी नींद में उठा दिए जाते हैं। वक्त से स्कूल पहुंचने का तनाव, कब, कौन से विषय की पढ़ाई होगी, उसकी तैयारी, होमवर्क। अगर कोई बच्चा शर्मिला है, झिझकता है, कमजोर है तो दूसरे बच्चों से तालमेल, सही बस में सही वक्त पर बैठना, घर पर होमवर्क का तनाव। इस सबमें परीक्षा और टेस्ट में कितने नंबर आए और कम आए तो क्यों आए, इन सारे सवालों का तनाव।

कहा जाता है कि बच्चों का बचपन तो तनाव-मुक्त होना चाहिए, लेकिन मां-बाप उन्हें जल्दी से जल्दी नर्सरी और स्कूल भेज देते हैं, क्योंकि बेहतर परवरिश के लिए पैसे चाहिए और उसके लिए काम जरूरी है। जब लॉकडाउन था, घर पर बच्चे खिलखिला रहे थे। कई को लगा कि पास-फेल के रिजल्ट से बेहतर घर पर पढ़ाई बेहतर है।

पिछले बरस के आखिर में यूके में डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन ने बताया कि हर साल होम स्कूलिंग बच्चों की तादाद तेजी से बढ़ रही है। घर पर पढ़ने-पढ़ाने के फलसफे (जो होम स्कूलिंग की बड़ी वजह है) को अगर कुछ देर एक तरफ रख दें तो मेंटल हेल्थ बड़ा कारण है। न सिर्फ बच्चे बल्कि मां-बाप भी बच्चे को स्कूली पढ़ाई से दूर ही रखना चाहते हैं। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है होम स्कूलिंग उन्हीं परिवारों में कामयाब है, जहां मां-बाप को काम करना ही होता है। शायद यही वजह है कि होम स्कूलिंग सम्पन्न घरों में बढ़ती जा रही है। जानकारों का तो यह भी मानना है कि जो बच्चे होम स्कूलिंग करते हैं, स्कूल जाने वाले बच्चे से ज्यादा समझदार और हाजिर जवाब हैं।

यूके में स्कूल सीजन में बच्चों को छुट्टी पर ले जाना मतलब खुद पर फाइन लगवाना है, लेकिन अब बदलाव आ रहा है और माता-पिता को बताया जा रहा है कि अगर होम स्कूलिंग देना चाहते हैं तो चिट्ठी लिख कर बता दें कि किस तरह की पढ़ाई चाहते हैं। सबमेंज्यादा आसान है, बच्चे की स्कूल से छुट्टी कर देना, क्योंकि आगे बढ़ने के लिए जिस पढ़ाई की जरूरत है, उसे सिखाने-समझाने में मां-बाप को पसीने आ जाते हैं। इस सबके बावजूद भी होम स्कूलिंग बढ़ रही है। आने वाली पीढ़ी के लिए यह राहत की खबर है। मार्क ट्वेन ने कहा था 'बच्चों के विकास में स्कूल ही सबसे बड़ा अड़ंगा है।' देखें, यह बात भारत कब पहुंचती है।

जुगलबंदी

समीर लाल 'समीर'

लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और वरिष्ठ व्यंग्यकार हैं।

हमने तभी जान ली थी अनुभव की कीमत

पहली बार किसी फाईव स्टार होटल में घुसने का मौका था एक दोस्त के साथ। तय हुआ था कि एक एक कॉफी पी जायेगी। एक कोई वहाँ बिल और 10 प्रतिशत टिप देगा। बाहर आकर आधा आधा कर लेंगे। इसी बहाने फाईव स्टार घूम लेंगे।

छात्र जीवन था। बम्बई में पढ़ रहे थे। एक जिज्ञासा थी कि अंदर से कैसा रहता होगा फाईव स्टार। छोटे शहर के मध्यम वर्गीय परिवार से आये हर बालक के दिल में उस जमाने में ऐसी जिज्ञासायें कुलबुलाया करती थीं।

बम्बई से जब घर जाया करते थे तो वहाँ रह रहे मित्रों के सामने अमिताभ बच्चन वगैरह के नामों को इग्नोर करना बड़ा संतुष्टी देता था जैसे उनसे बम्बई में रोज मिलते हों और उनका कोई आकर्षण हममें शेष नहीं बचा है। यथार्थ ये था कि एक बार दर्शन तक नहीं हो पाये थे तब तक।

खैर बात फाईव स्टार की हो रही थी। होटल तय हुआ ताज। दोपहर से ही दो बार दाढ़ी खींची। सच कहता हूँ डबल शेव या तो उस दिन किया या अपनी शादी के दिन। बस! सोचिये, दिलो दिमाग के लिए कितना बड़ा दिन रहा होगा।

अपनी सबसे बेहतरीन वाली सिल्क की गहरी नीली कमीज, जो अमिताभ नें मिस्टर नटवर लाल में पहनी थी, वो प्रेस करवाई। साथ में सफेद बेलबॉटम 34 बॉटम वाला। जवानी का यही बहुत बड़ा पंगा है कि आदमी यह नहीं सोचता कि उस पर क्या फबता है। खुद का रंग रुप कैसा है। वो यह देखता है कि फैशन में क्या है। जब तक यह अच्छा बुरा समझने की समझ आती है, तब तक इसका असर होने की उमर जा चुकी होती है। दोनों तरफ लूजर।

45 साल तक सिगरेट पीते रहे और फिर छोड़ कर ज्ञान बांटने लगे कि सिगरेट पीना अच्छा नहीं। मगर उससे होना क्या है, जितनी बैण्ड लंग्स की बजनी थी, बज चुकी। अब तो दुर्गति की गति को विराम के बदले थोड़ा सा आराम देने वाली ही बात शेष है।

खैर, शाम हुई। हाई हील के चकाचक पॉलिश किये हुए जूते पहनें और हम चले फाईव स्टार-द ताज!

चर्चगेट तक लोकल में गये और फिर वहाँ से टैक्सी में। 4-5 मिनट में पहूँच गये। जब दरबान ने दरवाजा खोला तब ऐसा उतरे मानो घंटा भर से बैठे टैक्सी में चले आ रहे हैं। दरबान के सलाम का भी कोई जवाब नहीं दिया। बड़े लोगों की यही स्टाईल होती है, हमें मालूम था।

सीधे हाथ हिलाते हुए फुल कान्फिडेन्स दिखाने के चक्कर में संपूर्ण मूर्ख नजर आते (आज समझ आता है) लॉबी में पहुंचे और सोफे पर बैठ लिए। मन में एक आशा भी थी कि शायद कोई फिल्म स्टार दिख जायें। नजर दौड़ाई चारों तरफ। लगा मानो सब हमें ही घूर रहे हैं। यह हमारे भीतर की हीन भावना देख रही थी शायद। मित्र ने वहीं से बैठे बैठे रेस्टॉरेन्ट का बोर्ड भांपा और हम दोनों चल दिये रेस्टॉरेन्ट की तरफ।

अन्दर मद्धम रोशनी, हल्का मधुर इन्सट्रूमेन्टल संगीत और हम दोनों एक टेबल छेक कर बैठ गये। मैने सोचा यहाँ तक आ ही गये हैं तो बाथरुम भी हो ही लें। बोर्ड भी दिख गया था, दोस्त को बोल कर चला गया।

अंदर जाते ही एक भद्र पुरुष सूटेड बूटेड मिल गये। नमस्ते हुई और हम आग्रही स्वभाव के, कह बैठे पहले आप हो लिजिये। वो कहने लगे नहीं सर, आप!! बाद में समझ आया कि वो तो वहाँ अटेडेन्ट था हमारी सेवा के लिए। हम खामखाँ ही फारमेल्टी में पड़ लिए। बाद में वो कितना हँसा होगा, सोचता हूँ तो आज भी शर्म से लाल टाईप होने वाली स्थितियों में आ जाता हूँ।

वापस रेस्टॉरेन्ट में आये, तब तक हमारे मित्र, जरा स्मार्ट टाईप थे उस जमाने में, कॉफी का आर्डर दे चुके थे।

कॉफी आई तो आम ठेलों की तरह हमारा हाथ स्वतः ही वेटर की तरफ बढ़ गया आदतानुसार कप लेने के लिए और वो उसके लिए शायद तैयार न रहा होगा तो कॉफी का कप गिर गया हमारे सफेद बेलबॉटम पर। वो बेचारा घबरा गया। सॉरी सॉरी करने लगा। जल्दी से गीला टॉवेल ला कर पौंछा और दूसरी कॉफी ले आया। हम तो घबरा ही गये कि एक तो पैर जल गया, बेलबॉटम अलग नाश गया और उस पर से दो कॉफी के पैसे। मन ही मन जोड़ लिए। सोचे कि टिप नहीं देंगे और पैदल ही चर्चगेट चले जायेंगे तो हिसाब बराबर हो जायेगा। अब की बारी जब वो नई कॉफी लेकर आया तो उसे टेबल पर कप रख लेने दिया, तब उसे उठाया।

बाद में उसने फिर सॉरी कहा और बताया कि 'कॉफी इज ऑन द हाऊस'। यानि बिल जीरो। आह!! मन में उस वेटर के प्रति श्रृद्धाभाव उमड़ पड़े। कोई और जगह होती तो पैर छू लेते मगर फाईव स्टार के ग्राहक- भला इतना निम्न कार्य कैसे कर सकते हैं। टिप देने का सवाल नहीं था क्यूँकि नुकसान हुआ था सो अलग। मगर मानक के अनुसार अगर देते भी तो जीरो का 20त्न भी तो जीरो ही हुआ। तब क्या दें?

चले आये रुम पर गुड नाईट करके उसे, दरबान को और टैक्सी वाले को। कॉफी का दाग तो खैर वाशिंग पाउडर निरमा के आगे क्या टिकता। 50 पैसे के पैकेट में बैलबॉटम फिर झकाझक सफेदी निरमा से आए में आ गई।

फिर तो कईयों को फाईव स्टार घुमवाये। अनुभवी होने के कारण हॉस्टल में हमारे जैसे शहरों और परिवेष से आये लोग अपना अनुभव बटोरने के लिए हमारा बिल पे करते चले गये। अनुभव की बहुत कीमत होती है, हमने तभी जान लिया था।